Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र
terapanthtimes.org

> **कर्म**
> क्रोधी मानी थका मरे तेहने,
> न वरे अपछरा आण।
>
> क्रोध और अहंकर के भावों में जो मरता है उसे अप्सराएं वरमाला नहीं पहनातीं।
> –आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली ● वर्ष 26 ● अंक 33 ● 19 मई - 25 मई, 2025 प्रत्येक सोमवार ● प्रकाशन तिथि : 17-05-2025 ● पेज 16 ₹ 10 रुपये

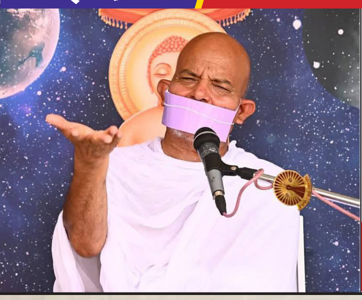

धर्म से बनाएँ इस दुर्लभ मानव जीवन को सफल : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 14

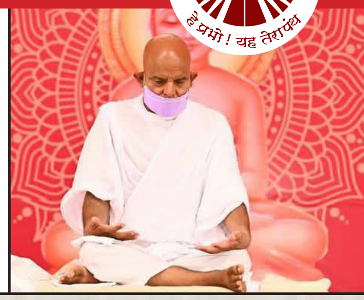

पट्ट आधार तो चद्दर है सुरक्षा कवच : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 15

Address Here

अविश्राम और अखंड चले अनमोल साधुपन : आचार्यश्री महाश्रमण

52वें दीक्षा दिवस पर आचार्य प्रवर ने किया साधुत्व की महिमा का बखान | नवम साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभाजी के चयन दिवस पर दिया मंगल आशीष

सिद्धपुर।
11 मई, 2025

वैशाख शुक्ला चतुर्दशी। तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशम अधिशास्ता, संयम सुमेरू आचार्यश्री महाश्रमणजी का 52वाँ दीक्षा दिवस, जिसे युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। आज से लगभग 51 वर्ष पूर्व, आचार्य श्री तुलसी की आज्ञा से सरदारशहर में मुनिश्री सुमेरमल जी 'लाडनूं' ने बालक मोहन को दीक्षित किया था। वह बालक आगे चलकर मुनि मुदित, फिर मुनि महाश्रमण, युवाचार्य महाश्रमण, और आज के आचार्य महाश्रमणजी बने — जो वर्तमान में भिक्षु शासन के एकादशम अनुशास्ता हैं।

इसी तिथि पर चार वर्ष पूर्व, सरदारशहर में आचार्य श्री महाश्रमणजी द्वारा साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी को तेरापंथ धर्मसंघ की नवम साध्वीप्रमुखा के रूप में नियुक्त किया गया था।

श्री स्वामी नारायण गुरुकुल परिसर में बने 'संयमोत्सव समवसरण' में आचार्यश्री के मंगल महामंत्रोच्चार के साथ आचार्य प्रवर के 52वें दीक्षा समारोह का शुभारम्भ हुआ। संयमोत्सव समवसरण में आचार्यश्री ने जिनवाणी का रसास्वादन कराते हुए कहा — एक सुंदर प्रश्न किया गया — मैं दुर्गति को प्राप्त न होऊँ, ऐसा कौन-सा आचरण करूँ?

यह संसार अध्रुव, अशाश्वत है, आत्मा शाश्वत है। शाश्वत और अशाश्वत दोनों सापेक्ष चीजें हैं। द्रव्यार्थिक नय की दृष्टि से कोई शाश्वत तो पर्यायार्थिक दृष्टि से वह अशाश्वत भी होता है। आत्मा शाश्वत है, परन्तु जीवन-काल अशाश्वत है।

25 बोल का 15वां बोल - आत्मा आठ :

1. **द्रव्य आत्मा**
2. **कषाय आत्मा**
3. **योग आत्मा**
4. **उपयोग आत्मा**
5. **ज्ञान आत्मा**
6. **दर्शन आत्मा**
7. **चारित्र आत्मा**
8. **वीर्य आत्मा**

आठ आत्माओं में द्रव्य आत्मा एक है, शेष सात भाव आत्माएं हैं। सिद्ध हो या संसारी, हर जीव में द्रव्य आत्मा प्राप्त होती है। द्रव्य आत्मा शाश्वत ही होती है। इसके साथ उपयोग आत्मा और दर्शन आत्मा भी प्रत्येक जीव में हर समय उपलब्ध होती हैं।

शेष पांच आत्माएं हर जीव में नहीं मिलती हैं। कषाय आत्मा अवीतराग में मिलेगी, वीतराग में नहीं। योग आत्मा चौदहवें गुणस्थान में नहीं मिलेगी, तेरहवें तक ही है। ज्ञान आत्मा मिथ्यात्वी जीवों में नहीं मिलेगी। चारित्र आत्मा चौथे गुणस्थान तक नहीं, पांचवें में देश चारित्र, छठे से चौदहवें तक। वीर्य आत्मा सिद्ध भगवान में नहीं मिलेगी।

तीन आत्माएं तो हर जीव में रहती हैं। बाकी पांच आत्माएं कोई किसी में, कोई किसी में होती हैं। संसारी जीवों में कम से कम छह आत्माएं होती ही हैं। कौन-सी छह— यह अंतर हो सकता है।

संन्यास और साधुपन बहुत बड़ी चीज

यह संसार दुःखमय है — जन्म, रोग, वृद्धावस्था और मृत्यु इसके प्रमाण हैं। फिर भी, आत्मा शाश्वत सुख को प्राप्त कर सकती है।

क्रमशः

मोक्ष में एकांत सुख है, वहाँ कोई दुःख नहीं है। प्रश्न किया गया — कौनसे आचरण को करने से दुर्गति में न जाना पड़े — साधुपन एक ऐसा धर्म है, जिसका आराधन करने से दुर्गति से बचा जा सकता है।

हमारी दुनिया में और इस जीवन में संन्यास और साधुपन बहुत बड़ी चीज है। संन्यास के सामने अन्य भौतिक चीजें ना-कुछ हैं। संन्यास जैसी पवित्र चीज भाग्य से ही मिल सकती है। भाग्य ठीक न हो तो मिली हुई वापिस भी जा सकती है। दुनिया में साधुपन और संयम अनमोल हैं — यह सौभाग्य से प्राप्त होता है। यदि साधुपन अविश्राम, अखंड चले, तो वह जीवन धन्य हो जाता है।

आज वैशाख शुक्ल चतुर्दशी है। आज के दिन मैंने गुरुदेव तुलसी की आज्ञा से मुनिश्री सुमेरमलजी 'लाडनूं' से यह संयम रत्न प्राप्त किया था। संयम रत्न को लेकर चलते आज 51 वर्ष पूर्ण हो गए हैं। मानो भीतर में ऐसी टोर्च है कि कहीं जाओ यह संयम की चेतना साथ रह सकती है।

मुनिश्री उदितकुमारजी स्वामी और मैंने एक साथ दीक्षा प्राप्त की थी। हमें संयम का संकल्प ग्रहण करने का सद्भाग्य प्राप्त हुआ था। मोहनीय कर्म के उदय और मोहनीय कर्म के क्षयोपशम के संघर्ष में हम विजय प्राप्त करें। साधु को ऋजुभूत होना चाहिए। साधु को झूठ बोलने से बचने का प्रयास करना चाहिए।

प्रायश्चित के तीन स्तर

साधुत्व की एक कसौटी है — सरलता। झूठ नहीं बोलना — साधु का नियम है, पर हर सच बात बोलनी ही — यह नियम नहीं है। साधुपन को शुद्ध बनाए रखना बहुत आवश्यक होता है। छोटा शिशु जिस तरह माता-पिता के सामने मन की बात कह देता है, वैसे ही जो महात्मा अधिकृत व्यक्ति को अपनी गलती बता देता है, वह धन्य है। कभी कोई गलती हो भी जाए तो उसकी आलोयणा लेकर उस भार को उतार देने का प्रयास होना चाहिए। कभी कहीं दोष लग जाए तो प्रतिक्रमण और प्रायश्चित से धवल चद्दर के दाग धुल जाएँ। हमारे संयम की शुद्धता की दृष्टि से दोनों समय का प्रतिक्रमण अवश्य हो जाए। प्रायश्चित के तीन स्तर हैं — अधिकृत को गलती बताना, प्रायश्चित स्वीकार करना, प्रायश्चित का निर्वहन करना।

संयम रत्न की प्राप्ति बड़े सौभाग्य की बात है। सभी को अपना साधुपन प्यारा होना चाहिए। जिस संघ में साधना हो रही है, वह संघ प्यारा और गुरु प्यारे बने रहें। आज मेरे संयम पर्याय में आने का दिन है। मैं भी बालमुनि के रूप में इस धर्मसंघ में दीक्षित हुआ था। लगभग बारह वर्ष की अवस्था में मुझे संयम रत्न की प्राप्ति हुई। इसको 51 वर्ष संपन्न हो गया। मेरा जीवन तो मानो धन्य हो गया। साधुत्व से बड़ी और अच्छी बात क्या हो सकती है। हमारा मूल सुरक्षित रहे।

मुझे दो-दो गुरुओं के शिष्यत्व का मौका मिला। मुनि श्री सुमेरमल जी स्वामी 'लाडनूं' से दीक्षा प्राप्त हुई। संसारपक्षीय मातुश्री नेमा जी और बड़े भाई सुजानमल जी दुगड़ ने दीक्षा हेतु आज्ञा दी और मुझे यह संयम रत्न प्राप्त हो गया।

साध्वीप्रमुखा श्री का चयन दिवस

आज के दिन तीन वर्ष पहले साध्वी विश्रुतविभा जी को साध्वीप्रमुखा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया था। मेरी दीक्षा की तिथि और आपके मनोनयन की तिथि एक ही हो गई। यह योग है या सलक्ष्य है — जो भी है। आचार्यों के अनुशासन में, इतने बड़े साध्वी समुदाय का मुखिया बनना एक विशेष भाग्य की बात है, जिम्मेवारी का कार्य है। पूज्यवर ने साध्वीप्रमुखा श्री को आशीष प्रदान करते हुए फरमाया — चित्त में समाधि रहे, स्वास्थ्य अच्छा रहे और मनोबल मजबूत रहे। चतुर्दशी के अवसर पर आचार्यश्री ने हाजरी के क्रम को भी संपादित किया। उपस्थित चारित्रात्माओं ने अपने स्थान पर खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया।

युवा दिवस पर मिली मुमुक्षु वृद्धि की प्रेरणा

युवा दिवस के उपलक्ष पर आचार्य प्रवर ने आशीर्वचन प्रदान करते हुए कहा — आचार्य श्री तुलसी का दीक्षा दिवस होता, तब भी संभवतः युवा दिवस कहलाता था, आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का भी दीक्षा दिवस युवा दिवस के रूप में और अब हमारा भी दीक्षा दिवस भी युवा दिवस के रूप में मनाया जाता है। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् और शाखाएं खूब अच्छा कार्य करती रहें और मुमुक्षु बनाने का प्रयास भी चलता रहे। धार्मिक-आध्यात्मिक कार्य आगे बढ़ते रहें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष रमेश डागा ने युवक परिषद् और किशोर मंडल के सभी साथियों की भावनाओं को प्रस्तुत करते हुए कहा — गुरुदेव! आप हर अर्थ, हर शब्द, हर रूप में युवा हैं। आपका श्रम, आपकी ऊर्जा, आपका हर एक पल हम युवकों के लिए प्रेरणा है।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के आध्यात्मिक पर्यवेक्षक मुनि योगेशकुमार जी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति करते हुए कहा — जिसका मूल अच्छा है, उसका फूल भी अच्छा होता है। हमारे मूल हमारे गुरु हैं, और उनकी परिधि में विकास, नव-नवोन्मेष होता रहे — यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है। आपकी फ़ौज इस प्रकार से सज्ज है कि आपके इंगित पर यह फ़ौज चाँद-तारों को छूने को तैयार है, आसमान से आगे बढ़ने को तैयार है। आज का दिन धर्मसंघ के युवाओं के लिए विशेष त्यौहार का दिन है।

गुजरात सरकार के उद्योग, उड्डयन व श्रम मंत्री बलवंत सिंह ने भी आचार्यश्री के दर्शन कर अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति दी। अभातेयुप उपाध्यक्ष पवन माण्डोत ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। तेरापंथ युवक परिषद–अहमदाबाद ने अपनी प्रस्तुति दी व गीत का संगान किया। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद द्वारा गीत को प्रस्तुति दी गई।

तेरापंथ महिला मण्डल–सिद्धपुर ने भी गीत का संगान किया। स्थानीय तेरापंथ कन्या मण्डल ने अपनी प्रस्तुति दी। राष्ट्रीय कन्या मण्डल प्रभारी अदिति सेखानी ने अपनी अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ महिला मण्डल व तेरापंथ कन्या मण्डल–अहमदाबाद ने गीत का संगान किया। बेंगलुरु से मूलचंद नाहर, जैन विश्व भारती की ओर से राजेश दूगड़, चतुर्मास व्यवस्था समिति–अहमदाबाद के स्वागताध्यक्ष भैरुलाल चौपड़ा, तेरापंथी सभा–अहमदाबाद के अध्यक्ष अर्जुन बाफना ने भी इस अवसर पर अपनी भावाभिव्यक्ति दी। जागृत कोठारी ने गीत की प्रस्तुति दी।

संसारी से सिद्ध बनने का मार्ग है साधुत्व : आचार्यश्री महाश्रमण

सिद्धपुर।
10 मई, 2025

युगदृष्टा, युगपुरुष आचार्यश्री महाश्रमणजी लगभग 11 किमी का विहार कर अपनी धवल सेना के साथ दो दिवसीय प्रवास हेतु सिद्धपुर के स्वामीनारायण गुरुकुल ट्रस्ट विद्यालय परिसर में पधारे।

संयमोत्सव समवसरण में संयम सुमेरु ने फरमाया कि — "आज हमारा सिद्धपुर में आगमन हुआ है। 'सिद्ध' नाम जैनत्व से जुड़ा हुआ है। जैन लोग तो णमोकार महामंत्र में कितनी बार सिद्धों को नमस्कार करते हैं। 'सिद्धकुमार' किसी व्यक्ति या स्थान का नाम हो सकता है। आठ कर्मों से मुक्त आत्माएं सिद्ध होती हैं।

सिद्ध आत्माएँ तो मोक्ष में जा चुकी हैं। जीवों के दो विभाग होते हैं — सिद्ध और संसारी। अनंत जीव सिद्धत्व को प्राप्त कर चुके हैं, किंतु उनसे कहीं अधिक संसारी जीव हैं, जो अब भी जन्म-मरण के चक्र में भ्रमण कर रहे हैं। साधु तो संसार को पीठ दिखा चुके होते हैं। वे ऋजुगति वाले होते हैं, मोक्ष की ओर उन्मुख होते हैं। सिद्ध पुरुषों ने भी अपने पूर्व जन्मों में कितनी साधना की होगी। भगवान महावीर ने भी समता की साधना कर सिद्धत्व को प्राप्त किया था। हमारा भी लक्ष्य हो — हम सिद्धत्व को प्राप्त करें।

णमोकार महामंत्र में एक पद है — 'णमो सिद्धाणं।' इसका जप अत्यंत कल्याणकारी होता है। साधु ही कभी सिद्ध बनता है। सिद्ध बनने का मार्ग है — साधुत्व का अवलंबन। साधुत्व मार्ग है, और सिद्धत्व मंजिल। दोनों का अपना-अपना महत्व है। जैसे सीढ़ियाँ होती हैं, तो आदमी आसानी से ऊपर चढ़ सकता है — वैसे ही साधुत्व, सिद्धत्व की सीढ़ी है। साधना के मार्ग में कठिनाइयाँ और परिषह आ सकते हैं — उन्हें शांति से सहन करना चाहिए। साधुत्व अत्यंत उच्च साधना है — उसके सामने भौतिक रत्न भी तुच्छ हैं। साधु को भौतिक आकर्षणों से मुक्त रहना चाहिए।

सिद्धत्व प्राप्ति के लिए आसक्ति से मुक्ति आवश्यक है। भोगी संसार में भ्रमण करता है, किंतु त्यागी वैराग्य से मुक्त होता है। मानव जीवन की सबसे बड़ी सफलता है — दीर्घकालीन संन्यास का जीवन। साधना है तो सिद्धि है। हमारे जीवन में अहिंसा रहे, और उसमें भी अभय का भाव हो। हम अभयदान देने वाले बनें। वे गुरु धन्य हैं जो अपने शिष्यों को सिद्धत्व के मार्ग पर चलाते हैं, शांति का पथ दिखाते हैं।

संत-समागम से उत्तम प्रेरणा प्राप्त हो सकती है। हमें भी संतत्व की ओर अग्रसर होना है। हम भी कभी सिद्धत्व को प्राप्त करें — यही हमारी कामना है।

साध्वीप्रमुखाश्री जी ने अपने उद्बोधन में कहा — "ब्रह्मज्ञान और परमात्मा का बोध कराने वाले ही सच्चे गुरु होते हैं। 'गुरु' और 'परमात्मा' — ये दो शब्द जीवन के पथ-प्रदर्शक हैं। गुरु वह होता है जो पाँच महाव्रतों को धारण करता है। आचार्यवर की धृति विलक्षण है — आप समस्याओं का समाधान करने वाले, भिक्षावृत्ति से जीवन यापन करने वाले, सामायिक और समता में स्थित रहने वाले, तथा धर्मोपदेश देने योग्य आदर्श गुरु हैं। आप वास्तव में एक शक्तिसंपन्न आचार्य हैं — और सिद्धत्व का मार्ग दिखाने वाले भी।"

पूज्यवर के स्वागत में लोभचंद चावत, शंकरलाल इंटोदिया, संजय इंटोदिया, कस्तूरभाई व ज्ञानार्थी तक्ष ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। स्थानीय महिला मण्डल ने स्वागत गीत का संगान किया। ज्ञानशाला व कन्यामंडल द्वारा "सिद्ध पुरुष की प्रस्तुति" के माध्यम से अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति दी गई। सिद्धपुर की बहन-बेटियों ने भी अपनी प्रस्तुति दी।कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

संयम स्वर्णोत्सव कार्यक्रम का हुआ आयोजन

कालू।

साध्वी उज्ज्वलरेखा जी के दीक्षा पर्याय के 50वर्षों की पूर्णता पर तेरापंथी सभा, कालू द्वारा संयम स्वर्णोत्सव कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन दो चरणों में हुआ। प्रथम चरण में साध्वियों द्वारा साध्वीश्री जी के प्रति मंगलकामना प्रेषित की गई।

साध्वी उज्ज्वलरेखा जी ने कहा कि आज से 50 वर्ष पूर्व गुरुदेव तुलसी के कर कमलों से दीक्षित होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

संघ सेवा परम लक्ष्य रहा है। साध्वी श्री ने अपने संयम पर्याय के 50 वर्ष के बारे में संक्षिप्त में जानकारी दी। तेरापंथ धर्मसंघ की वयोवृद्ध साध्वी सुदीर्घजीवी शासनश्री साध्वी बिदामां जी ने साध्वीश्री के प्रति मंगलकामना व्यक्त की।

सहवर्ती साध्वियों द्वारा संवाद व गीतिका के द्वारा उनके 50 वर्षों के संयम पर्याय पर शुभकामनाएँ प्रेषित की गयी।

साध्वी स्मितप्रभा जी ने साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा जी के संदेश का वाचन किया। प्रथम चरण के कार्यक्रम का संचालन साध्वी अमृतप्रभा जी द्वारा किया गया।

द्वितीय चरण में महिला मंडल एवं कन्या मंडल द्वारा साध्वी उज्ज्वलरेखा जी के संयम पर्याय के 50 वर्ष पूर्ण होने पर त्याग व तप के साथ गीतिका का संगान किया गया।

महासभा कार्यकारिणी सदस्य विनोद सिंघी, तेरापंथ सभा अध्यक्ष बुधमल लोढ़ा, मंत्री रतनलाल बांठिया, एवं अन्य कई लोगों ने भी अपनी आध्यात्मिक श्रद्धा एवं त्याग-तप की भेंट समर्पित की। द्वितीय चरण के कार्यक्रम का संचालन हर्षा सांड ने किया।

नेत्रदान जागरूकता रैली और सेमिनार का हुआ आयोजन

हैदराबाद।

तेरापंथ युवक परिषद हैदराबाद द्वारा प्रभावी नेत्रदान जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के मंगलपाठ के बाद बरकतपुरा से शुरू हुई इस रैली में समाज के सभी वर्गों के लोगों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

तेयुप कार्यकर्ताओं के साथ किशोरों, कन्याओं, युवाओं, पुरुषों और महिलाओं सहित समाज के अनेक सदस्यों ने लगभग 2 किलोमीटर तक पैदल चलकर नेत्रदान के महत्व का संदेश दिया।

प्रतिभागियों ने नेत्रदान के संदेशों से सजी तख्तियां उठाईं और राहगीरों को इस नेक कार्य के बारे में जानकारी देने वाले पर्चे वितरित किए।

यह रैली बरकतपुरा से शुरू होकर ताजमहल होटल के रास्ते हिमायतनगर स्थित तेरापंथ युवक परिषद के नवनिर्मित कार्यालय पर समाप्त हुई।

इस आयोजन में तेयुप हैदराबाद की सेवा टीम के प्रेम बेंगानी, सुदीप नौलखा, महावीर दक, प्रमोद भंडारी और किशोर मंडल सह-संयोजक रुद्र बैद ने सक्रिय भूमिका निभाई। समाज के कई गणमान्य व्यक्तियों, ने रैली के सफल आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

रैली के बाद, नवीनीकृत तेयुप कार्यालय में आयोजित नेत्रदान जागरूकता सेमिनार में वासन आई केयर के डॉ. अरविंद और टेक्नीशियन उदय व हरिवर्धन ने नेत्रदान की प्रक्रिया और महत्व पर प्रकाश डाला। तेयुप अध्यक्ष अभिनंदन नाहटा ने सभी अतिथियों का स्वागत किया।

नेत्रदान के क्षेत्र में उनके अमूल्य योगदान के लिए वासन आई केयर टीम को सम्मानित किया। उन्होंने बताया कि परिषद की प्रेरणा से अब तक 20 से अधिक नेत्रदान हो चुके हैं।

वासन आई केयर के तकनीशियनों ने नेत्रदान के तकनीकी पहलुओं पर जानकारी साझा की।

इस पहल का उद्देश्य समाज में नेत्रदान से जुड़ी गलत धारणाओं को दूर करना था। तेयुप के राज्य प्रभारी प्रवीण श्यामसुखा ने परिषद द्वारा इस क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों की जानकारी दी।

संगठन मंत्री जिनेंद्र बैद ने कार्यक्रम का संचालन किया और मंत्री अनिल दुगड़ ने सभी प्रतिभागियों और अतिथियों का आभार व्यक्त किया। तेयुप कार्यकर्ताओं ने कार्यक्रम के संपादन में अहम भूमिका निभाई।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
19 मई - 25 मई, 2025

'चक्षुष्मान महाप्रज्ञ' कार्यक्रम का हुआ सफल आयोजन

लिलुआ।

मुनि जिनेश कुमार जी के सान्निध्य में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की पुण्य स्मृति में 'चक्षुष्मान महाप्रज्ञ' कार्यक्रम का आयोजन श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा लिलुआ द्वारा संगम हॉल में किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संजय भूतोड़िया, मुख्य वक्ता पूजा ऋतु बोथरा (कोलाघाट) थी। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल लिलुआ के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत भाषण लिलुआ सभा के अध्यक्ष अनिल जैन ने दिया।

इस अवसर पर उपस्थित जनसमुदाय को 'चक्षुष्मान आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के कल्याणकारी अवदान' विषय पर जन समुदाय को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी के कहा, "आचार्य श्री महाप्रज्ञ जैन शासन के चक्षुष्मान व ज्योतिर्धर पुरुष थे। उनकी ऋजुता, अप्रमत्तता, विनम्रता, प्रमोद भावना, विद्वता व सम्यक् चिन्तन से जैन समाज ही नहीं मानव जाति भी प्रभावित थी। उन्होंने सहज समर्पण, अनुशासन, विधायक भाव, निष्ठा पंचक से आचार्य श्री तुलसी के हृदय में अपना स्थान बना लिया। वे विश्व के सबसे महान संत व युगीन समस्याओं के समाधायक थे।"

मुनिश्री ने आगे कहा, "उन्होंने आगे वाले युग की समस्या तनाव से निजात दिलाने के लिए प्रेक्षाध्यान का अवदान दिया। प्रेक्षाध्यान के प्रयोगों से हजारों-हज़ारों लोग लाभान्वित हुए हैं। उन्होंने शिक्षा पद्धति के अधूरेपन को दूर करने के लिए जीवन विज्ञान का अवदान दिया। उन्होंने अहिंसा यात्रा के जरिये देश में आपसी सद्भावना का वातावरण तैयार किया। उनका साहित्य पढ़ने वाले को एक नया पथदर्शन प्रदान करता है।

इस अवसर पर मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत संगान किया। विशिष्ट अतिथि संजय भूतोड़िया, मुख्य वक्ता पूजा ऋतु बोथरा, युवक परिषद के मंत्री जयंत ने अपने विचार व्यक्त किये। तेरापंथी सभा के सदस्यों ने सुमधुर गीत का संगान किया।

इस अवसर पर साउथ हावडा तेरापंथ कन्या मंडल ने महासती ब्राह्मी पर एक लघुनाटिका प्रस्तुत की। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री शरद लूनिया ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया।

क्रोध जीवन का माइनस पॉइन्ट

सिकन्दराबाद।

डॉक्टर साध्वी गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में 'Anger - Life Changer' विषय पर विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया। साध्वीश्री ने कहा, "क्रोध हमारे विवेक का दुश्मन है, दुःख का अंगार है, कैंसर का आखरी स्टेज है।

शान्त सहवास का सबसे बड़ा दुश्मन क्रोध है। क्रोध के अनेक कारण हैं उसमें कुछ कारण हैं- अहंकार, मन के प्रतिकूल कार्य, ईर्ष्या की आग, समझ की कमी। क्रोध मधुर संबंधों में जहर घोलने का कार्य तो करता ही है साथ में हमारे जीवन को हानि पहुंचाता है। क्रोध जीवन का माइनस पॉइन्ट है और क्षमा प्लस पॉइन्ट है। मंत्र के विशेष जप से कषाय कम किया जा सकता है।

साध्वी मयंकप्रभा जी ने कहा कि क्रोध का प्रारंभ नादानी से होता है और उसका अंत पश्चाताप से होता है। शांत वातावरण को अशान्त बनाने वाला तत्व क्रोध है।

जो उपशम का मूल्य नहीं जानता वह जीने की कला भी नही जानता। क्रोध को शान्त करने लिए दीर्घश्वास व समवृत्ति श्वास प्रेक्षा का विशेष प्रयोग करवाया गया।

साध्वी मेरुप्रभाजी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया। कार्यक्रम की शुरुवात बोइनपल्ली की बहनों के स्वागत गीत से हुई। TPF के अध्यक्ष वीरेन्द्र घोषल ने स्वागत वक्तव्य दिया।

कार्यक्रम का कुशलतापूर्वक संचालन साध्वी दक्षप्रभा जी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन संपत नौलखा द्वारा किया गया। मनोज डागा का विशेष सहयोग प्राप्त हुआ।

तत्वज्ञान एवं प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

हैदराबाद।

तेरापंथ महिला मंडल के तत्वावधान में साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में त्रिदिवसीय तत्वज्ञान कार्यशाला का आयोजन श्वेता भावना बेंगानी, ओल्ड बोवेनपल्ली, सिकंदराबाद के निवास स्थान पर किया गया।

त्रिदिवसीय तत्वज्ञान कार्यशाला में साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी ने अपने उद्बोधन में लोक की रचना के बारे में बताया। साध्वी मयंकप्रभा जी ने 24 तीर्थंकरों की माताओं द्वारा देखे जाने वाले 14 सपनों को कहानी के माध्यम से क्रमशः याद करवाया। इस अवसर पर तत्वज्ञान संबंधित प्रश्नों का समाधान भी किया गया। साध्वी मेरुप्रभा जी ने नमस्कार महामंत्र की विशेषताएं समझायी। साध्वी दक्षप्रभा जी ने सुमधुर गीतिका का संगान किया।

प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देशानुसार प्रेक्षा कल्याण वर्ष के अंतर्गत आयोजित कार्यक्रम में साध्वीश्री ने सही श्वास कैसे लेना, समवृति श्वास, दीर्घ श्वास के बारे में विस्तार से बताया, ध्यान के प्रयोग करवाये।

मंडल की उपाध्यक्ष अंजू चोरडिया ने स्वागत किया। ममता दुगड़, श्वेता व भावना बेंगाणी ने विदाई गीत का संगान किया। बेंगाणी परिवार ने सभी का आभार व्यक्त किया। मंगल पाठ के साथ कार्यशाला का समापन हुआ।

नगर प्रवेश पर अभिनंदन

चेन्नई।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण के सुशिष्य मुनि मोहजीत कुमार जी, मुनि भव्यकुमार जी, मुनि जयेश कुमार जी का गींडी से चेन्नई नगर प्रवेश हुआ। मुनि वृंद के प्रवेश पर स्वागत यात्रा में नगर के गणमान्य व्यक्ति एवं संघीय संस्थाओं के पदाधिकारियों, कार्यकर्ताओं की उपस्थिति बढ़ चढ़ कर रही।

स्वागत यात्रा की परिसम्पन्नता एस. एस. जैन स्थानक में परिषद के रूप में परिणत हुई। कार्यक्रम का शुभारंभ मंजू गेलड़ा, कविता मुथा के मंगलाचरण से हुआ। चेन्नई महिला मंडल ने स्वागत गीत का संगान किया। स्वागत-अभिनंदन समारोह में समुपस्थित जन मेदिनी को संबोधित करते हुए मुनि मोहजीत कुमार ने कहा कि साधु-साध्वियों का आगमन जन जागरण एवं आत्म उत्थान के लिए होता है। उन्होंने आचार्य श्री महाश्रमण के प्रति अहोभाव प्रकट करते हुए गुरु के आशीर्वाद को प्रसाद रूप में स्वीकार किया। मुनिश्री ने श्रावक समाज से कहा कि शक्ति, भक्ति, अनुरक्ति को सार्थक बनाने का प्रयास करना है। जीवन को पवित्र बनाने के लिए संयम, तप, स्वाध्याय आदि के साथ सद्भाव, अन्तः जागरण, श्रद्धा की सघनता का विकास आवश्यक है।

समारोह में प्रेरणा प्रदान करते हुए मुनि भव्य कुमारजी ने कहा कि हर कार्य में भव्यता होनी चाहिए। जीवन के हर पल को सुरम्य बनाने के लिए विशेष प्रयत्न करने का प्रयास करना है। समय का सम्यक नियोजन कर आगे बढ़ने का लक्ष्य बनाएं। इस अवसर पर मुनि जयेश कुमारजी ने कहा कि जीवन में कुछ नया करने का भाव जागृत करें।

नया चिंतन, निर्णय और क्रियान्विति के बिना किसी कार्य को सफलता नहीं मिल सकती। हमें नये विकास के लिए अपने आपको विस्तृत करना होगा। पेड़ की जड़ें अगर नहीं फैलेगी तो जड़ों में मजबूती नहीं आएगी। हमें अपने संस्कारों को सक्षम बनाना होगा। चेन्नई प्रवेश पर स्वागत समारोह में किल्पॉक सभा अध्यक्ष अशोक कुमार परमार, चेन्नई सभा अध्यक्ष अशोक खतंग, तेयुप उपाध्यक्ष विशाल सुराणा ने विचार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन अशोक मुथा ने किया। महेन्द्र खांटेड ने आभार प्रकट किया।

नवम प्रेक्षाध्यान गहन साधना शिविर हुआ सम्पन्न

सिरियारी।

आचार्य श्री भिक्षु समाधि स्थल संस्थान, सिरियारी के तत्वावधान में नवम प्रेक्षाध्यान गहन साधना शिविर का आयोजन मुनि श्री धर्मेश कुमार जी के मार्गदर्शन में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की शुरुआत प्रेक्षाध्यान गीत के संगान से हुई। मुनि धर्मेश कुमार जी ने कहा, "इस शिविर का उद्देश्य अनासक्त चेतना का जागरण है, जो दीर्घकालीन ध्यान-साधना से ही संभव है।"

मुनि चैतन्य कुमार जी 'अमन' ने संबोधित करते हुए कहा, "त्याग से पदार्थ छूटता है, पर ममत्व नहीं। ममत्व का त्याग वैराग्य और अनासक्ति से होता है, जिससे वीतरागता की प्राप्ति होती है। समत्व साधना, प्रेक्षाध्यान साधना का मूल है। महत्वपूर्ण यह

> **व्यक्ति बड़ा या छोटा बने, बल्कि जीवन में मधुरता और साधना में वर्धमानता बनी रहे।"**

नहीं कि व्यक्ति बड़ा या छोटा बने, बल्कि जीवन में मधुरता और साधना में वर्धमानता बनी रहे।"

लगभग दो सौ साधकों ने मासिक रूप से आयोजित इस शिविर से लाभ प्राप्त करने का प्रयास किया। मुख्य प्रशिक्षक के रूप में दिल्ली से पधारे पारसमल दुगड़, सुनीला नाहर, मंजू सिपानी एवं हनुमान बरड़िया ने विभिन्न ध्यान प्रयोग करवाए।

शिविर के अंत में सभी साधकों को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। उपस्थित साधक-साधिकाओं ने अपने अनुभव साझा किए।

कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का शुभारम्भ

जयपुर।

अभातेयुप के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद् जयपुर द्वारा कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला का सप्त दिवसीय आयोजन भिक्षु साधना केन्द्र में 'शासन गौरव' बहुश्रुत साध्वी कनकश्री जी के सान्निध्य में किया गया। कार्यशाला का शुभारम्भ मंगलाचरण से हुआ। तेयुप जयपुर के मंत्री अभिषेक भंसाली ने कार्यशाला में भाग लेने वाले प्रतिभागियों का स्वागत किया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुये उपाध्यक्ष श्रेयाँस कोठारी ने कहा, "स्वयं पर विश्वास हो तो हम हर मंजिल पा सकते हैं। कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग कार्यशाला में सूरत से पधारी हुई जोनल ट्रेनर चारवी शाह ने विभिन्न प्रकार से अभ्यास करवाते हुये प्रतिभागियों को कहा कि जीवन में प्रगति के लिए हमेशा अपना आत्मविश्वास बनाये रखें। हर व्यक्ति के जीवन में शिक्षा के साथ-साथ संस्कार का होना बहुत जरूरी है।" कार्यक्रम की कुशल संयोजना में संयोजक रवि छाजेड़, रजत संचेती का श्रम उल्लेखनीय रहा।

जल संरक्षण विषय पर कार्यशाला का आयोजन

नागपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल नागपुर द्वारा एक बूंद : एक सागर - जल संरक्षण विषय पर कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ भवन नागपुर में किया गया। मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। तत्पश्चात तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा सरिता आर डागा ने सबका स्वागत किया। उपासक सीए आदित्य कोठारी ने समझाया कि जैन धर्म में पानी को जीव माना गया है, इसीलिए पानी का उपयोग बहुत ही सोच समझकर करें ताकि जीव हिंसा ना हो पाए। जल है तो हम हैं, हमारा भविष्य है। महिलाएं अगर घर में काम करते हुए पानी के उपयोग का छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखें तो पानी की बहुत बचत हो सकती है। मंच का कुशल संचालन प्रोजेक्ट डायरेक्टर कोषाध्यक्ष प्रमिला मालू ने किया। आभार तेरापंथ महिला मंडल मंत्री मीनू बोथरा ने व्यक्त किया। कार्यक्रम में बहनों की अच्छी उपस्थिति रही।

संक्षिप्त खबर

अभिवंदना कार्यक्रम के अंतर्गत भक्ति संध्या का आयोजन

सरदारपुरा जोधपुर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, सरदारपुरा, जोधपुर द्वारा आचार्य महाश्रमण अभिवंदना कार्यक्रम के अंतर्गत भक्ति संध्या का आयोजन ओसवाल कम्यूनिटी हॉल सरदारपुरा, जोधपुर में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से स्थानीय गीतकार वैभव भंडारी ने की। तेयुप सरदारपुरा के अध्यक्ष मिलन बांठिया ने सभी का स्वागत किया।

गायक दर्शन चोपड़ा ने अपने मधुर सुरों से दर्शकों का मन मोह लिया। भक्ति संध्या में करीब 300 दर्शकों की उपस्थिति रही। परिषद के शाखा प्रभारी संदीप ओस्तवाल, अभातेयुप सदस्य रोशन बागरेचा, रोशन नाहर एवं विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों की विशेष उपस्थिति रही। कार्यक्रम का सफल संयोजन संगठन मंत्री धीरज बेंगानी ने किया। अंत में तेयुप मंत्री देवीचंद तातेड़ ने सभी का आभार प्रकट किया।

जैन संस्कार विधि

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

भूमि पूजन

■ **जयपुर।** तेरापंथ युवक परिषद् जयपुर के द्वारा ETERNAL BUSINESS GREEN PARK LLP चाकसू में शांतिलाल, विनय, विवेक, अभिषेक भंसाली के नव प्रतिष्ठान का भूमि पूजन जैन संस्कार विधि से संस्कारक मर्यादा कोठारी ने सम्पादित करवाया।

■ **जयपुर।** तेरापंथ युवक परिषद् जयपुर द्वारा जैन संस्कार विधि से महाप्रज्ञ इन्टरनेशनल स्कूल, निर्माण नगर, जयपुर में निर्मित होने वाले महाश्रमण विहार (आवासीय ब्लॉक) का जैन संस्कार विधि से भूमि पूजन संस्कारक मर्यादा कोठारी, गौतम बरड़िया, सौरभ जैन ने विधिवत रूप से सम्पन्न करवाया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **जयपुर।** तेरापंथ युवक परिषद् जयपुर के अंतर्गत जैन संस्कार विधि से प्रतिभा बरड़िया के नूतन आवास का गृह प्रवेश कार्यक्रम संस्कारक श्रेयांश बैंगानी, गौतम बरड़िया एवं पवन जैन ने सम्पन्न करवाया।

■ **जयपुर।** शांति देवी-प्रदीप मालू के नूतन आवास में संस्कारक श्रैयाँस कोठारी, पवन जैन व गौतम बरड़िया ने जैन संस्कार विधि से गृह प्रवेश कार्यक्रम सम्पन्न करवाया।

टीपीएफ द्वारा संबोध कार्यशाला का आयोजन

हैदराबाद।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम के अध्यक्ष विरेन्द्र घोषल के निवास स्थान पर आध्यात्मिक कार्यशाला "संबोध" का आयोजन साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी आदि ठाणा के सान्निध्य में सम्पन्न हुआ। कार्यशाला का विषय था — "जिन, जैन और जैन धर्म"।

साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी ने जिन, जैन और जैन धर्म की परिभाषाओं के साथ-साथ अरिहंत और सिद्ध भगवान के स्वरूप पर गहन प्रकाश डाला। साध्वी मयंकप्रभा जी ने अपने विचार रखते हुए कहा, "हम इस कार्यशाला के माध्यम से आपको जैन धर्म की ABCD से परिचित कराने का प्रयास कर रहे हैं।"

कार्यक्रम में टीपीएफ अध्यक्ष विरेन्द्र घोषल ने सभी श्रावक-श्राविकाओं का स्वागत करते हुए साध्वीश्री के प्रति आभार व्यक्त किया। राष्ट्रीय सहमंत्री मोहित बैद ने आयोजन के लिए टीम TPF को शुभकामनाएं दीं। कार्यशाला का उद्देश्य आत्मिक उन्नयन, जैन दर्शन की गहराई को समझना और सामाजिक समरसता को प्रोत्साहित करना रहा, जिसे सफलतापूर्वक पूरा किया गया। कार्यक्रम में आत्मा की शुद्धता, जिनवाणी, तथा धर्म के जीवन में महत्व जैसे विषयों पर विस्तार से चर्चा हुई। इस अवसर पर टीपीएफ के पूर्व अध्यक्ष पंकज संचेती, उपाध्यक्ष राजेन्द्र पारख, अणुव्रत सुराणा सहित अनेक पदाधिकारी, सदस्यगण और श्रद्धालुजन उपस्थित रहे।

'स्वस्थ जीवन का रहस्य' कार्यशाला का आयोजन

राजाजीनगर।

तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा 'स्वस्थ जीवन का रहस्य' विषय पर एक विशेष कार्यशाला का आयोजन साध्वी सोमयशा जी के सान्निध्य में स्थानीय तेरापंथ सभा भवन में आयोजित हुआ।

कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीश्री के द्वारा नमस्कार महामंत्र के मंगल उच्चारण से की गई। इसके पश्चात महिला मंडल एवं तेयुप साथियों द्वारा सुंदर गीतिकाएँ प्रस्तुत की गईं।

तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया ने डॉ. प्रज्ञा दुधेड़िया का परिचय देते हुए सभी अतिथियों का स्वागत और अभिनंदन किया। साध्वी सोमयशा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि हमारे जीवन में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता अत्यंत आवश्यक है। वात, पित्त और कफ का संतुलन स्वास्थ्य का आधार बताया गया है।

यदि हम इन्हें संतुलित रखें और रसनेन्द्रिय पर संयम रखें तो अनेक बीमारियों से बचा जा सकता है।

उन्होंने बताया कि चातुर्मास काल में खाद्य संयम दिवस मनाया जाता है, जो हमें यह स्मरण कराता है कि भोजन साधना के लिए होना चाहिए, न कि केवल स्वाद के लिए। उन्होंने योग, ध्यान, व्यायाम, मुद्राओं और सूर्य की किरणों से प्राण शक्ति प्राप्त करने की विधियों पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज मानसिक तनाव के कारण अनेक रोग उत्पन्न हो रहे हैं, जिनसे हम इन क्रियाओं के माध्यम से बच सकते हैं।

डॉ. प्रज्ञा दुधेड़िया ने अपने वक्तव्य में बताया कि जैन धर्म में हर समस्या का समाधान है। उन्होंने आचार्य तुलसी के शब्दों को उद्धृत करते हुए कहा कि "फूल बनकर मुस्कुराओ," जहाँ फूल का अर्थ दाँत से है।

दाँत केवल सौंदर्य के लिए नहीं, बल्कि अच्छे स्वास्थ्य के लिए भी अत्यंत आवश्यक हैं। उन्होंने भोजन को चबा-चबाकर खाने की महत्ता बताई और कहा कि भोजन के बाद कुल्ला अवश्य करें, जिससे अनेक बीमारियों से बचा जा सकता है।

इस अवसर पर डॉ. प्रज्ञा दुधेड़िया का जैन पट्ट द्वारा सम्मान किया गया। कार्यक्रम में सभा अध्यक्ष अशोक चौधरी, तेयुप अध्यक्ष कमलेश चौरड़िया, महिला मंडल अध्यक्षा ऊषा चौधरी तथा अनेक श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाएँ उपस्थित रहे।

प्रेक्षा ध्यान, जीवन-विज्ञान और साहित्य के महान आचार्य के 16वें महाप्रयाण दिवस पर विविध कार्यक्रम

मध्य उत्तर कोलकाता

मुनि जिनेश कुमारजी के सान्निध्य में तेरापंथी सभा मध्य-उत्तर कोलकाता द्वारा हरियाणा भवन में प्रेक्षाप्रणेता युगप्रधान आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के 16 वें महाप्रयाण दिवस पर श्रद्धार्पण समारोह का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर उपस्थित धर्मसभा को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा आचार्य महाप्रज्ञ जी अनेक विशेषताओं के धनी थे। वे एक संत, आचार्य, प्रशासक, ज्ञानी, विज्ञानी, आगम वेत्ता, विधिवेता, दार्शनिक, यायावर, प्रवचनकार, साहित्यकार, लेखक व कवि थे। वे जैन न्याय के राधाकृष्णन् थे। उनकी सहिष्णुता, समर्पण, श्रमनिष्ठा, सहजता, सरलता बेजोड़ थी। वे निर्मल व पवित्र आभा से सम्पन्न थे। उन्होंने अनेक सम सामयिक विषयों पर करीब 275 ग्रंथों की रचना की। उनके ग्रंथ साहित्य जगत की अमूल्य निधि हैं।

मुनिश्री ने आगे कहा, "वे आचार्य श्री तुलसी के विचारों के भाष्यकार थे। उन्होंने अपने जीवन के नौवें दशक में अहिंसा यात्रा कर विशिष्ट कार्य किया। उनके 16 वें महाप्रयाण दिवस पर अपनी श्रद्धा समर्पित करता हूं।" इस अवसर पर मुनि परमानंद जी ने कहा कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी दृढ़, संकल्प के धनी थे। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल मध्य कोलकाता की बहनों द्वारा महाप्रज्ञ अष्टकम् के संगान से हुआ। स्वागत भाषण तेरापंथी सभा मध्य उत्तर कोलकाता के अध्यक्ष पारसमल सेठिया ने दिया। इस अवसर पर कलकत्ता सभा के अध्यक्ष अजय भंसाली, रमेश गोयल ने अपने श्रद्धासिक्त उद्‌गार व्यक्त किये। श्रद्धार्पण समारोह में तेरापंथ महिला मंडल मध्य कोलकाता, पूर्वांचल, दक्षिण कलकत्ता, दक्षिण हावड़ा, उत्तर हावड़ा, टांलीगंज-बेहाला ने गीत, कविता, शब्दचित्र आदि के माध्यम से आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी को श्रद्धा समर्पित की। आभार ज्ञापन सहमंत्री विनय बच्छावत ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंदजी ने किया।

रात्रि में मुनिश्री के सान्निध्य में 'एक शाम महाप्रज्ञ के नाम' भजन संध्या का आयोजन ओसवाल भवन में आयोजित किया गया। इस अवसर पर जैन कार्यवाहिनी तेयुप साउथ हावड़ा, उम्मेद राखेचा ग्रुप ने सुमधुर गीतों का सामूहिक संगान करते हुए अपनी श्रद्धा समर्पित की। मुनि कुणाल कुमार जी, जगत छाजेड़, ताराचंद बरमेचा एवं सुरेन्द्र बोथरा ने एकल गीत प्रस्तुत किया।

बालोतरा

तेरापंथ भवन सदर बाजार में 'शासनश्री' साध्वी सत्यप्रभा जी ठाणा - 4 के सान्निध्य में महान दार्शनिक आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 16वां महाप्रयाण दिवस मनाया गया। 'शासनश्री' साध्वी सत्यप्रभाजी ने नमस्कार महामंत्र का उच्चारण कर कार्यक्रम प्रारंभ किया। मंगलाचरण कन्या मंडल एवं महिला मंडल द्वारा किया गया।

'शासनश्री' साध्वी सत्यप्रभाजी ने कहा, "आचार्य श्री महाप्रज्ञजी अलौकिक महापुरुष थे। छोटी अवस्था में संयम पथ को स्वीकार किया। आचार्य श्री तुलसी ने अपने शिष्य मुनि नथमल (महाप्रज्ञजी) को अपना उत्तराधिकारी बनाया और कहा कि संयम साधना के साथ एक नया काम करो - आत्म साक्षात्कार। उसी आत्म साक्षात्कार से प्रेक्षा ध्यान, योग साधना, जीवन विज्ञान का बड़ा कार्य किया।"

साध्वी ध्यानप्रभाजी ने कहा – आचार्य श्री महाप्रज्ञजी विलक्षण व्यक्तित्व के धनी थे। उन्होंने अपने जीवन को सरलता, विनम्रता और समर्पण के भावों से जीवन जिया ओर मानव जाति को कई अवदान प्रदान किये। दीक्षार्थी मुमुक्षु प्रेक्षा बांठिया, दीक्षार्थी मुमुक्षु राजुल खटेड़ और मुमुक्षु सेजल भंडारी ने भाव प्रकट करते हुए आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के साधना काल की उपलब्धियां बताई।

तेरापंथ सभा के अध्यक्ष महेंद्र वैद ने महापुरुष आचार्य महाप्रज्ञ जी के गुणों को बताते हुए उनका अनुसरण करने का कहा। महिला मंडल अध्यक्षा निर्मला संकलेचा ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के विचारों व अनेक विशेषताओं को बताया। महिला मंडल द्वारा सामूहिक गीत के द्वारा आचार्य महाप्रज्ञजी को भावपूर्ण श्रद्धा सुमन अर्पित की। उपासक स्वरूप दांती, गायक प्रकाश श्रीश्रीमाल, तेरापंथ युवक परिषद सह मंत्री राजेंद्र वैद ने श्रद्धांजलि अर्पित की। कार्यक्रम का सफल संचालन सभा मंत्री प्रकाश वेद द्वारा किया गया।

जसोल

साध्वी जिनरेखा जी के सान्निध्य में तेरापंथ के दशम अधिशास्ता आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी की 16वीं पुण्यतिथि का आयोजन स्थानीय पुराना ओसवाल भवन जसोल में किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत तेरापंथ महिला मंडल ने महाप्रज्ञ अष्टकम से की। 'शासनश्री' साध्वी जिनरेखा ने अपने उद्बोधन में कहा– "आचार्य महाप्रज्ञ प्रतिभा के अलौकिक अवतार थे। प्रज्ञा के महासूर्य थे। आपकी प्रज्ञा के प्रकाश में अज्ञान तमस का नाश हुआ। आपके हर वाक्य ने संतप्त मानव जाति को शांति का निर्झर प्रदान किया।

साध्वी मधुरयशाजी, साध्वी धवलप्रभाजी, साध्वी मार्दवयशाजी ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के कुशल व्यक्तित्व को उजागर किया। महिला मंडल अध्यक्ष कंचनदेवी ढेलडिया, सभा अध्यक्ष भूपतराज कोठारी, ज्ञानशाला प्रभारी डूंगरचंद सालेचा, महासभा संभाग प्रभारी गौतमचन्द सालेचा, पा.शि. संस्था के संयोजक मोतीलाल जीरावला आदि ने आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के प्रति भावांजलि व्यक्त की। तेरापंथ महिला मंडल ने सामूहिक गीत की प्रस्तुति दी। साध्वीवृन्द ने सामूहिक गीत 'ऐसा मिले वरदान' की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का सफल संचालन साध्वी श्वेतप्रभाजी ने किया।

जोबनेर

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ उपसभा जोबनेर में 'शासनश्री' साध्वी मधुरेखा जी के सान्निध्य में आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का 16वां महाप्रयाण दिवस मनाया गया। उपासिका भारती लोढ़ा के मंगलाचरण से कार्यक्रम की शुरुआत हुई।

साध्वी मधुरेखा जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने अपने संकल्प बल, आत्म बल, संयम बल और समर्पण बल से संघ में नव आयाम उद्‌घाटित किये। साध्वी श्री ने नत्थू से महाप्रज्ञ तक की यात्रा के रोचक संस्मरणों की प्रस्तुति देते हुए आचार्य श्री की योग साधना, प्रखर प्रज्ञा आदि की जानकारी दी।

साध्वी सुव्रतयशा जी एवं साध्वी लोकोत्तर प्रभा जी ने कविता के माध्यम से श्रद्धांजलि अर्पित की। साध्वी मधुयशाजी ने आचार्य महाप्रज्ञ जी के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालते हुए उनके द्वारा प्रदत्त अवदानों की चर्चा की। साध्वी सविताश्री जी आदि साध्वियों ने सामूहिक गीत की सुंदर प्रस्तुति दी। बहनों ने भावपूर्ण शब्द चित्र प्रस्तुत किया।

'प्रेक्षा प्रवाह: शक्ति और शांति की ओर' कार्यशाला का आयोजन

नागपुर।

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित 'प्रेक्षा प्रवाह: शक्ति और शांति की ओर' कार्यशाला का आयोजन तेरापंथ महिला मण्डल नागपुर द्वारा तेरापंथ भवन में किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत महिला मण्डल की बहनों द्वारा मंगलाचरण से हुई। तेरापंथ महिला मण्डल अध्यक्षा सरिता आर डागा ने प्रेक्षा प्रशिक्षक अमित जैन एवं सभी बहनों का स्वागत किया। अमित जैन ने बहनों को डिप्रेशन के जीवन में प्रभाव और उसे दूर करने के उपाय बताते हुए कहा कि जितना ज्यादा हम क्रोध, मान, माया लोभ से दूर रहेंगे, उतना ही हमारा डिप्रेशन कम रहेगा, हमें ज्यादा से ज्यादा खुश रहना चाहिए। तेजस केंद्र से लेकर ज्योति केंद्र तक का ध्यान करवाया।

प्रेक्षा प्रशिक्षक अमित जैन का सम्मान मंडल की पदाधिकारी बहनों द्वारा किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन प्रोजेक्ट डायरेक्टर कोषाध्यक्ष प्रमिला मालू ने किया। तेरापंथ महिला मंडल मंत्री मीनू बोथरा ने आभार व्यक्त किया।

आध्यात्मिक मिलन समारोह

चेन्नई।

आचार्य श्री महाश्रमण के सुशिष्य मुनि मोहजीत कुमार जी ठाणा-3 और मुनि दीपकुमार जी ठाणा-2 का तेरापंथ भवन साहूकार पेट में आध्यात्मिक मिलन हुआ।

आध्यात्मिक मिलन समारोह में मुनि दीप कुमार जी ने मुनित्रय का भावपूर्ण स्वागत करते हुए कहा कि एक दशक के बाद मुनिश्री का मिलन आनन्ददायक है। मुनि दीप कुमारजी ने अतीत के क्षणों को प्रसन्नता से प्रकट करते हुए कहा कि यह मिलन मन और भावों का मिलन है। मुनि मोहजीत कुमार जी ने 'मिलन सदा सुखकारी' गीत का संगान करते हुए कहा कि आज तेरापंथ शासन समुद्र की दो लहरों का सात्विक मिलन हो रहा है जो आध्यात्मिक आनंद को प्रकट करता है। कहा भी गया है – सन्त मिलन-गंगा की धारा, इस धारा में बहने वाला पावन बनता है।

मुनि भव्य कुमारजी ने कहा कि संयमी से संयमी का मिलन अध्यात्म की ऊंचाईयों को प्रकट करता है। मुनि जयेश कुमार ने कहा मुनि जनों का मिलन आत्मा की पवित्रता के साथ जुड़ा हुआ मिलन है। मिलन समारोह में तेरापंथ सभा की ओर से विमल चिप्पड़ और महेंद्र मांडोत ने विचार प्रकट किए।

तेरापंथ महिला मंडल ने मंगलाचरण एवं स्वागत गीत प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि काव्य कुमार जी ने किया।

महातपस्वी धर्मदिवाकर युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के 64वें जन्मोत्सव, 16वें पट्टोत्सव एवं 52वें दीक्षा दिवस पर सादर अभिवंदना

मंगल भावां रो ले उपहार

● शासनश्री साध्वी पानकुमारी ●

महाश्रमण आचार्य प्रवर री आरती उतारां म्हैं,
मंगल भावां रो ले उपहार हो।।

1.सोने रो सूरज ऊग्यो है, भैक्षव शासन आंगण में,
दूध रो बरसे अमृत धार हो।।

2. छायो है सुरंगों रंग तेरापंथ शासन में,
खुशियां रो उमड्यो पारावार हो।।

3. गुरुदेव रे सूझ-बूझ री जावां म्हैं बलिहारी हो,
हीरो निकल्यो सुखकार हो।।

4. मंगल बेला में म्हैं आज मोत्यां चौक पुरावां हो,
कुंकुम रा पगल्या उतरया आंगणे।।

5. करो आपश्री राज जुग-जुग शासन हो सांतरी,
तेरापंथ गण री जय जय कार।।

लय - तेजा रे

हे महाश्रमण! शत-शत अभिनंदन

● साध्वी पुण्ययशा ●

अभिनंदन, अभिनंदन, अभिनंदन,
अमृतवर्षी महापुंज का अभिनंदन,
ज्योतिर्मय दिव्य चरणों में वंदन।
हे महाश्रमण! शत-शत अभिनंदन।।

तेजोमय नयन युगल का अभिनंदन,
गतिमय चरण युगल का अभिनंदन,
श्रममय हस्तयुगल का अभिनंदन,
नत मस्तक रोम-रोम से भावभरा वंदन,
हे महाश्रमण! शत-शत अभिनंदन।।

ज्ञानयोगी का अभिनंदन,
प्रबल प्रयोगी का अभिनंदन,
अविचल ध्रुवयोगी का अभिनंदन,
हंष मनीषा को श्रद्धामय वंदन,
हे महाश्रमण! शत-शत अभिनंदन।।

पारदर्शी व्यक्तित्व का अभिनंदन,
महिमा मंडित नेतृत्व का अभिनंदन,
ऊर्जस्वित कर्तृत्व का अभिनंदन,
फौलादी संकल्प को हार्दिक वंदन,
हे महाश्रमण! शत-शत अभिनंदन।।

शशि सी शीतलता का अभिनंदन,
गगन सी निर्मलता का अभिनंदन,
धरती सी सहनशीलता का अभिनंदन,
आत्मबल तपोबल को वंदन,
हे महाश्रमण! शत-शत अभिनंदन।।

आर्य अविचल हमारे

● साध्वी परमयशा ●

ज्ञानपुंज को, दिव्यपुंज को, वंदन बारम्बार,
शीतल शशधर गिरधर नागर, उतरे बन अवतार।
आर्य अविचल हमारे, गूंजते जय जयकारे।।

मंदिर पूजा आरती देवार्य तुम्हीं हो,
अर्चना आराधना के रूप तुम्हीं हो।
आशा तुम्हीं हो श्वास तुम्हीं हो, मधुमास श्रृंगार।।

नशामुक्ति नैतिकता से जग को जगाया,
सद्भावना सुधा से भाग्य को सजाया।
तपःपूत की शांतिदूत की, आभा अपरम्पार।।

3. देश विदेश तीर्थाटन से कीर्तिमान बनाया,
तेरापंथ शासन को शिखरों चढ़ाया।
शांति प्रदायक गण महानायक, अमृत के भंडार।।

4. अखिलेश जिनेश गुरुवर जिनवर कहाएं,
जय जय ज्योतिचरण को शीष झुकाएं।
आस्तिक-नास्तिक जो भी आया, बन गया भक्त उदार।

नेमाजी के लाल का जीकारा सुहाना,
सत्य के पुजारी का विश्व है दीवाना।
नंदनवन में भैक्षवगण में, खिला-खिला दरबार।।
बनों शतायु-रहो चिरायु, परमयशा उद्‌गार।।

लय - स्वर्ग से सुंदर

जय ज्योतिचरण वन्दन

● साध्वी संयमलता ●

जय ज्योतिचरण वन्दन, जय महाश्रमण वन्दन,
अभिवेक दिवस पर हम करती हैं अभिनन्दन।
इस जन्म दिवस पर हम करती हैं अभिनन्दन।
इस युवा दिवस पर हम करती हैं अभिनन्दन।
धन्य धरा सरदारशहर में उतरे ज्योतिचरण,
दुगड़ कुल मां नेमां पितु झूमर मन पुलकन।।

मुस्कान भरा मुख मंडल -2, ये सौम्य शान्त मोहक मुद्रा मन भाए,
अमृतमय तेरी वाणी -2, सुनने को हर मानव ललचाए।
शुभ दृष्टि पड़े जहां खिल जाए भाग सुभाग,
ये खुश नसीबी हम सबकी मिले महाश्रमण-महाभाग।।

कमनीय कीर्तिधर तेरी-2, ये सुयश कीरतियां पहुंची देश-विदेश,
ओजस्वी अहिंसा यात्रा-2, से दिया विश्व को तुमने शांति संदेश।
डगर-डगर चल नगर-नगर, पंहुचे सिक्किम भूटान,
नशामुक्ति नैतिकता सद्भाव तेरे अवदान।।

इतिहास पुरुष हो गुरुवर-2, हर रोज नए-2 गढ़े इतिहास,
संकल्प और साहस की-2, बस्तर यात्रा बनी पृष्ठ इक खास।
तुम शांतिदूत, हो तपःपूत, गौरव गाता है जहान,
सक्षम महाप्रज्ञ पट्टधर तुलसी सा तेज महान।।

लय - क्या खूब लगती हो

अध्यात्म सुमेरु है

● साध्वी कुमुदप्रभा ●

अध्यात्म सुमेरू है, महान यायावर है, गणरत्नाकर है,
ज्योतिचरण महाश्रमण, महाश्रमण ज्योतिचरण।।

नयन युगल में तेज निराला,
भक्तों की किस्मत का जो खोलते हैं ताला।
अनुत्तर संयम है, अनुत्तर उपशम है,
करुणासागर हो।।

पापभीरू व्यक्तित्व मनोहर,
समवसरण में दिव्य देशना लगती है शुभंकर।
अतिशयधारी है, धीरता भारी है,
शीतल शशिधर हो।।

ऋद्धि सिद्धि भंडार है गुरुवर,
परमानंद अखिलेश्वर की वाणी है क्षेमंकर।
आगम व्याख्याता है, समाधि प्रदाता है,
शासन नायक हो।।

स्मित मुद्रा गुलशन को खिलाए,
विनम्रता के शिरोमणि को त्रिभुवन शीष झुकाए।
यशस्वी शासन है, लब्धिधर पावन है,
खेवनहारे हो।।

लय - तू कितनी अच्छी है

युग निर्माता युग प्रहरी

● साध्वी मुक्ताप्रभा ●

युग निर्माता युग प्रहरी, महाश्रमण तुम्हें प्रणाम।
धरती के महा अवतार, गण नंदन वन आराम।।

कुशल शास्ता की वाक् पटुता लगती है मनहारी,
पुण्यात्मा की शिव रूप है, सूरत देव तुल्य निहारी।
अभिषेक की पावन वेला, दशो दिशाएं करती ललाम।।

हे अमृत के महासागर, साहित्यिक रचना तुम्हारी,
गुण रत्नों के महा आकर, सम्यक संस्कृति है प्यारी।
है बहुश्रुत विश्रुत भगवन, गति-मति-धृति अभिराम।।

शुंभकर प्रियंकर हे विभो, शांति, शक्ति आनंददाता,
पौरुष की दीपशिखा गुरुवर, घट-घट के विज्ञाता।
हे कृपा महासिंधु तुम मंगलकारी, अमर है शिवालय राम।।

तन्मय होकर, चिन्मय बनकर, अर्चा करें तुम्हारी,
सज्झाय झाणं में रहे निरन्तर, हो अन्तर्यात्रा हमारी।
स्थिर चेता, आत्मविजेता, अनासक्त चेतना को सलाम।।

कल्याणकारी, भवभयहारी, अंतस्तल के है राम,
तेरापंथ की आन-बान-शान तुम,
अखिल विश्व की पहचान हो तुम।
हे सिद्धिप्रवर शक्तिदायक जिनशास्ता का,
सुमिरण करते आठूं याम।।

नवम साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी के चतुर्थ चयन दिवस पर चारित्रात्माओं के उद्गार

अंक तीन के सन्दर्भ में साध्वीप्रमुखा विश्रुतविभा

● साध्वी सिद्धार्थप्रभा ●

तीर्थंकर भगवान गणधरों को तीन मातृका पद का उपदेश देते हैं - उप्पण्णे इवा, विगमेइ वा, धुवेइ वा - उत्पत्ति, विनाश और ध्रौव्य। ये तीन मातृका पद सृष्टि का मूल हैं। इस आधार पर गणधर सूत्रागम की रचना करते हैं। यह कथन संक्षेप नय की दृष्टि से है। यदि इन तत्वों को अनेक वर्गों में वर्गीकृत किया जाए तो जैन दर्शन को विस्तार से जाना व समझा जा सकता है। किसी भी तत्त्व या वस्तु के विविध पहलुओं को जानने से उस विषय की गहरी जानकारी प्राप्त हो सकती है। सिर्फ तत्त्व या वस्तु ही नहीं, अपितु किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व की पहचान भी तभी सुगमता से प्राप्त होती है जब उसे विविध पहलुओं से देखा जाए। ऐसे अनेक व्यक्तित्वों में एक महान् विभूति है - तेरापंथ धर्मसंघ की नवमी साध्वीप्रमुखा साध्वी विश्रुतविभाजी। साध्वीप्रमुखाश्री जी का व्यक्तित्व भी विविधता लिए हुए है। उनका जीवन भी विविध पहलुओं का स्पर्श करता है। आज उनके तीसरे चयन दिवस की परिसम्पन्नता के उपलक्ष में प्रस्तुत आलेख उनके जीवन के उन पहलुओं को देख रहा है जो अंक तीन से जुड़ा हुआ है। उनका जीवन अनेक रूपों में प्रेरणा दे रहा है, परन्तु यहां सिर्फ संख्या की दृष्टि से तीन-तीन विषयों की परिगणना की गई है। इससे साध्वीप्रमुखाश्री जी के जीवन से जुड़े अनेक तथ्यों को सुगमता से जाना जा सकता है।

1. उनके गृहस्थ अवस्था के नाम में तीन अक्षर थे - सरोज :

1. स
2. रो
3. ज

2. उन्होंने तीन आध्यात्मिक श्रेणियों का आरोहण किया -

1. मुमुक्षु
2. समणी
3. साध्वी

3. भिन्न-भिन्न आध्यात्मिक श्रेणियों के भिन्न-भिन्न तीन अभिधान हुए -

1. मु. सविता
2. समणी 'स्मित' प्रज्ञा
3. साध्वी 'विश्रुत विभा'

4. तीन मुख्य प्रसंग लाडनूं में हुए -

1. वैराग्य प्रस्फुरण (संस्था प्रवेश)
2. अभिनिष्क्रमण (समणी दीक्षा)
3. श्रेणी आरोहण (साध्वी दीक्षा)

5. संस्था के 6 साल में प्रथम तीन साल में स्नातक से पूर्व के तीन कोर्स (अध्ययन) किए।

6. शेष तीन साल में विश्वविद्यालय के B.A. अध्ययन में ब्राह्मी विद्या पीठ से तीन सालों में तीन-तीन महीनों के सेमेस्टर से गहन अध्ययन किया।

7. तीन दायित्वों को प्रथम बार संभाला -

1. प्रथम मुमुक्षु निर्देशिका
2. प्रथम समणी नियोजिका
3. प्रथम विदेश यात्रा

8. तीन गुरुओं द्वारा तीन पद पर आसीन हुईं -

1. समणी नियोजिका - आचार्य तुलसी
2. मुख्य नियोजिका - आचार्य महाप्रज्ञ
3. साध्वी प्रमुखा - आचार्य महाश्रमण

9. अपने जीवन में तीन आचार्यों का निकट सान्निध्य प्राप्त हुआ -

1. आचार्य तुलसी
2. आचार्य महाप्रज्ञ
3. आचार्य महाश्रमण

10. साधना की प्रारम्भिक अवस्था में तीन विभूतियों का योग रहा -

1. गुरु तुलसी
2. गुरु महाप्रज्ञ
3. शासनमाता

11. ठाणं के तीसरे स्थान के अनुसार जीवन के तीन याम होते हैं : 8 से 30 वर्ष, 31 से 60 वर्ष, 61 से आगे। उस अपेक्षा से आपका तीसरा याम चल रहा है।

12. समणी दीक्षा के समय लाडनूं से दीक्षित होने वाली बहिनें तीन -

1. मु. सरिता (समणी स्थितप्रज्ञा)
2. मु. सविता (समणी स्मितप्रज्ञा)
3. मु. विभावना (समणी विशुद्धप्रज्ञा)

13. तीन महाद्वीपों की यात्रा -

1. Asia
2. Europe
3. America

14. श्रेणी आरोहण के बाद तीन देशों की यात्रा -

1. भारत
2. नेपाल
3. भूटान

15. लाडनूं की तीसरी साध्वी प्रमुखा -

1. सा.प्र. लाडांजी
2. सा.प्र. कनकप्रभाजी
3. सा.प्र. विश्रुतविभाजी

16. आपके निकटतम ज्ञाति साध्वी तीन हैं -

1. सा. चन्द्रलेखा जी
2. सा. सोमप्रभा जी
3. सा. मुदितयशा जी

17. आपके दूरवर्ती ज्ञाति सदस्य भी तीन हैं -

1. सा. जिनप्रभा जी
2. सा. मंगलप्रभा जी
3. समणी अभयप्रज्ञा जी

18.मुख्य नियोजिका अलंकरण दिनांक - 3 Nov, 205

19. मुख्य नियोजिका की अवस्था में तीन नव दीक्षित साध्वियों का लुञ्चन किया -

1. सा. शारदा प्रभा
2. सा. स्नेह प्रभा
3. सा. नमन प्रभा

20. मुख्य नियोजिका की अवस्था में आचार्य महाप्रज्ञ जी की विद्यमानता में आपको तीन बक्शीश प्रदान किए गए -

1. समुच्चय के कार्यों की बक्शीश
2. आहार की पांती की बक्शीश
3. समुच्चय के बोझ की बक्शीश

21. आपको मुख्य नियोजिका की अवस्था में आचार्य महाश्रमण द्वारा प्रदत्त बक्शीश ये हैं -

1. औषध विगय बक्शीश
2. हाजरी में खड़ा न होना
3. कुर्सी पर बैठने की बक्शीश

22. तीन भाषाओं में लेखन किया -

1. अंग्रेजी
2. हिन्दी
3. संस्कृत (मूलपाठ की संस्कृत छाया)

23. तीन वस्तुओं का प्रायः अधिक उपयोग करती हैं -

1. रजोहरण / प्रमार्जनी
2. उपनेत्र
3. माला

24. प्रारम्भ से साधना के तीन आयामों में सबसे अधिक प्रवृत्त हैं -

1. तप
2. जप
3. स्वाध्याय

25. मुख्य नियोजिका की अवस्था में उपवास के अतिरिक्त सबसे ज्यादा तपःसाधना तेरे की करवाते थे।

26. प्रतिदिन लगभग जागरण का समय - 3.30 am

27. तीन स्थानों पर प्रायः मौन साधना -

1. चलते समय
2. आहार करते समय
3. प्रतिक्रमण करते समय

28. तीन अनूठे संकल्प -

1. विधिवत प्रतिक्रमण करना
2. गुरु दर्शन बिना आहार ग्रहण नहीं करना
3. प्रतिदिन चौविहार नवकारसी

29. आपने तीन प्रकार के स्थविरत्व को प्राप्त किया -

1. जाति स्थविर
2. श्रुत स्थविर
3. पर्याय स्थविर

30. परमाराध्य आचार्यश्री तुलसी ने 19 नवंबर, 1992 में भगवान महावीर दीक्षा कल्याणक के अवसर पर लाडनूं में आगम अध्ययन में विधिवत् संलग्न किया - 3 संत, 3 साध्वियों, 3 समणियों को -

1. सा. श्रुतयशा
2. सा. मुदितयशा
3. सा. विश्रुतविभा

31. परमपूज्य युवाचार्य महाप्रज्ञ जी के सान्निध्य में आगम कार्य में प्रथम जुड़ने वाली साध्वियां तीन थीं -

1. सा. श्रुतयशा
2. सा. मुदितयशा
3. सा. विश्रुतविभा

32. आपश्री ने तीन आगमों का काम संयुक्त रूप में किया -

1. नंदी
2. अनुयोगद्वार
3. ज्ञाताधर्मकथा

33. आपश्री ने तीन Introductory text का लेखन किया -

1. Introduction to Jainism
2. Introduction to Terapanth
3. Introduction to Preksha Meditation

ऐसे अनेक त्रिभंगिया आपश्री के व्यक्तित्व के साथ जुड़ जाती हैं। हमने देखा, आपश्री तीसरे पद 'आचार्य पद' की विशेष आराधना करती हैं। साध्वीप्रमुखा मनोनयन के इस तीसरे बसंत की परिसम्पन्नता पर आत्मनिष्ठा, संघनिष्ठा व गुरु निष्ठा से अभिस्नात आपका जीवन यूं ही सदियों तक साध्वी समाज को ज्ञान, दर्शन, चारित्र की त्रिपथगा की प्रेरणाएं देता रहे मंगल कामना।

आसन पर शोभित नवमासन

● साध्वी दर्शितप्रभा ●

शासन माता के आसन पर, शोभित नवमासन,
महर कराई महाराजा ने हर्षित श्रमणीगण।
महावीर युग महाश्रमण के युग में हमने निहारा,
चन्दबाला सम नेतृत्व देखा सबने तुम्हारा,
कि पैनी गुरु दृष्टि, हमारी है सृष्टि।।

1. विमल विमलतम जीवन तेरा, नई प्रेरणा देता,
आचार शुद्धता रहे निरंतर, प्रतिबोध हमें है मिलता।
पावन उज्जवलतम आभालय सुधा सिन्धु बरसा है,
प्रगतिपथ पर प्रतिपल बढ़ने की बस अभिलाषा है।
पैनी गुरु दृष्टि, हमारी है सृष्टि।

2. श्रुत आराधन करके गुरुत्रय, युग में विश्रुत बनकर,
पान किया स्वाध्याय सुधा का, श्रुत का अवगाहन कर।
निज चेतन में रमण किया गहराई में जाकर,
अन्तर्प्रज्ञापुंज प्रभु का वरदहस्त है सिर पर।
पैनी गुरु दृष्टि हमारी है सृष्टि।

3. तपे-जपे और खूब खपे शासन की शान बढ़ाई,
जप प्रयोग और ध्यान प्रयोगों, से शक्ति है पाई।
सरिता से स्मितप्रज्ञा, स्मितप्रज्ञा से विश्रुतविभा बन,
देश-विदेशों में जाकर खूब किया उन्नयन।
पैनी गुरु दृष्टि हमारी है सृष्टि।।

4. विभा निखारी महाप्रज्ञ की प्रयोगशाल में तुमने,
गहराई में झांका देखा निज चेतन महासतिवर ने।
भरो प्राण नन्हे पंखों में, नील गगन है छूना,
'समयं गोयम मा पमायए' सूक्त हमें जीना।
पैनी गुरु दृष्टि हमारी है सृष्टि।।

लय - उड़ जा काले कावां

साध्वीश्री संचितयशाजी के प्रयाण पर चारित्रात्माओं के उद्गार

सेवा, समर्पण और साधना की प्रतीक

● मुनि कमलकुमार ●

डॉ. साध्वी संचितयशा जी सेवाभावी एवं कर्तव्य परायण साध्वी थीं। उनकी दीक्षा गणाधिपति गुरुदेव श्री तुलसी के मुख-कमल से संपन्न हुई। दीक्षा के पश्चात उन्होंने अपना सम्पूर्ण समय अध्ययन, साधना और सेवा में समर्पित कर दिया।

लगभग चौबीस वर्षों से मेरा उनसे निरंतर संपर्क बना रहा। 'शासनश्री' साध्वी सोमलता जी की सहयोगिनी होने के कारण जब भी साध्वी सोमलता जी से मिलन होता, संचितयशा जी उनकी छाया की भाँति साथ दिखाई देती थीं। डबल एम.ए. का कोर्स करके भी वे अहंकारमुक्त, सरल और विनम्र साध्वी रहीं। गत वर्ष मुंबई में गुरुदेव श्री महाश्रमण जी ने काफी लम्बा अवसर प्रदान किया। हमने देखा साध्वी श्री हमारे हर कार्य को बड़े अहो भाव से करती - चाहे सिलाई हो, रंगाई हो अन्य कोई कार्य। स्वयं अस्वस्थ रहते हुए भी निरंतर सेवा देती रहीं।

'शासनश्री' के देवलोकगमन के पश्चात वे साध्वी शकुंतला जी की भी पूरे अहोभाव से सेवा करतीं। साध्वी जागृतप्रभा जी एवं साध्वी रक्षितयशा जी को स्नेह से बांधे रखा।

उनकी भावना थी कि उनके रहते-रहते शासनश्री की जीवनी जन-जन के हाथों तक पहुँच जाए, किंतु वह संकल्प पूर्ण न हो सका।

शरीर की अस्वस्थता को देखते हुए उन्होंने गुरुदेव से आज्ञा आलोयणा प्राप्त कर संथारा पूर्वक शरीर का त्याग किया—यह बहुत बड़ी बात है। साध्वी शकुंतला कुमारी जी को अपनी अग्रगण्या व सहयोगिनी को अंत समय तक पूरा सहयोग ही नहीं जागृत अवस्था में संथारा पचखाने का जो अवसर प्राप्त हुआ, यह भी बड़ी बात है। दोनों ही साध्वियों ने मुंबई जैसे महानगर से संथारा पूर्वक विदाई ली।

इस अवसर पर मैं यह मंगलकामना करता हूँ कि साध्वीश्री की आत्मा उत्तरोत्तर गतिमान होते हुए अपने चरम लक्ष्य को प्राप्त करें।

मृत्युंजयी साधिका : साध्वी संचितयशा

● साध्वी अणिमाश्री, डॉ. साध्वी सुधाप्रभा ●

संघ वाटिका रंग-बिरंगे फूलों से मनोहर एवं रमणीय बनी हुई है। आज से 36 वर्ष पूर्व, इसी संघ वाटिका में एक कली खिली थी, जो फूल बनकर सबको सम्मोहित करती रही। वह फूल आज नहीं रहा, किन्तु उसकी खुशबू से धर्मसंघ महक रहा है। तुलसी युग के उस फूल का नाम है साध्वी संचितयशा।

संघ गगन की चमकती हुई तारिका का नाम है साध्वी संचितयशा। हर पल को खूबसूरती से जीने वाली चेतना का नाम है साध्वी संचितयशा। जीवन के हर पल को सृजन में लगाकर आनन्द के निर्झर में अहर्निश अभिस्नात होने वाली निर्झरणी का नाम है साध्वी संचितयशा। जीवन को उत्सव की तरह जीने वाली एवं अंतिम समय में मृत्यु को महोत्सव का रूप देने वाली मृत्यंजयी साध्वी का नाम है साध्वी संचितयशा।

साध्वी संचितयशा जी हमारे धर्मसंघ की एक प्रबुद्ध साध्वी थीं। उनका शोध-प्रबंध उनकी प्रबुद्धता का दिग्दर्शन कराने वाला है। उनकी सुदृढ़ लेखनी से आलेखित लेख पाठकों को नई दिशा देने वाले होते थे। वे कुशल लेखिका एवं गीतकार साध्वी थीं।

साध्वी संचितयशा जी कलाप्रिय साध्वी थीं। सिलाई, कढ़ाई एवं रंगाई में वे निष्णात थीं। वे चित्रकला में पारंगत थीं। उनके हाथों से निर्मित अमृत कलश को देखकर लगता था, वास्तव में कला की साधना की हो।

साध्वी संचितयशा जी तेरापंथ दर्शन की ज्ञाता एवं तत्वज्ञ साध्वी थीं। गूढ़ तत्वों को सरल शब्दों में व्याख्यायित करने में सिद्धहस्त थीं। उनका आन्तरिक व्यक्तित्व आकर्षक एवं प्रभावक था। वे सौम्य स्वभाव की, मृदु व्यवहार वाली, मधुर तथा अल्पभाषिणी साध्वी थीं। उपशांत कषाय वाली साध्वी थीं। क्षण-क्षण जागरूक रहकर हर क्षण को सार्थक करने वाली साध्वी थीं। वे इंगियाकार संपन्न साध्वी थीं।

शासनश्री साध्वी सोमलता जी के साथ 25 वर्षों तक पय और मिश्री की तरह एकमेक होकर रहीं। उन्होंने शासनश्री को हर पल निश्चिंतता प्रदान की। परछाई की तरह साथ रहने वाली साध्वी संचितयशा जी ने उनको अहर्निश चित्त समाधि प्रदान की।

शासनश्री साध्वी सोमलता जी के प्रयाण के पश्चात वे साध्वी शकुन्तला जी के साथ रहीं। चारों साध्वियों की परस्परता, सौहार्द स्तुत्य है। अस्वस्थ रहने के बावजूद वे हमेशा प्रसन्न रहती थीं। साध्वी शकुन्तलाश्री जी ने उनको संथारापूर्वक विदाई दी है। उनके आत्मोत्थान में सहयोगी बनी हैं। साध्वी जागृतयशा जी, साध्वी रक्षितयशा जी ने खूब सेवा की है। उनकी रिक्तता सभी को खल रही होगी, पर उस रिक्तता की पूर्ति असंभव है। भवितव्यता को कोई रोक नहीं सकता।

साध्वी संचितयशा जी हमारी संसारपक्षीय भतीजी थीं। मुम्बई प्रवास में उनसे मिलना हुआ। उनकी विनम्रता, सहजता, सरलता से मैं अभिभूत हूँ। वे वीतराग चेतना, वीतरागता के पथ पर निरन्तर गतिशील रहीं एवं एक दिन शिवरमणी का वरण करें।

संसार पक्षीय संतोकभाई जी चण्डालिया के पूरे परिवार ने जागरूकता के साथ अपने दायित्व का निर्वहन किया है। आगे भी धर्मसंघ की सेवा करते रहें — मंगलकामना।

पुण्यात्मा थीं साध्वी संचितयशाजी

● साध्वी धनश्री ●

जन्म और मृत्यु अवश्यम्भावी हैं। जो भी इस संसार में आता है, उसे एक दिन इस नश्वर संसार को अलविदा कहना ही पड़ता है। आने और जाने के बीच जो समय होता है, उसमें कुछेक विरल आत्माएँ उस अल्प समय को सार्थक बनाकर अपने जीवन को सफल बना लेती हैं। ऐसी ही पुण्यात्मा थीं 'साध्वी संचितयशाजी', जो मेरी संसारपक्षीय भतीजी महाराज थीं।

उन्होंने असह्य वेदना को सहते हुए संथारे का वरण किया। आज यह सुनकर गौरव की अनुभूति हो रही है कि उन्होंने न केवल चण्डालिया परिवार में, बल्कि भैक्षव शासन में भी अपनी ख्यात बढ़ाई है। उनकी विरल आत्मा उत्तरोत्तर प्रगति करती हुई अपनी लक्षित मंज़िल को प्राप्त करे, मुक्तिगामी बने।

अप्रमत भावों में विहरण करने वाली साध्वी संचितयशाजी

● साध्वी कान्तयशा ●

अचानक संवाद मिला कि साध्वी संचितयशाजी ने तिविहार फिर चौविहार संथारा कर लिया है। सम्पर्क करने का प्रयत्न हुआ तो हंसमुख भाई से ज्ञात हुआ कि उन्होंने अपना लक्ष्य सिद्ध कर लिया है। सुनते ही अतीत के वातायन से स्मृतियां उभर-उभर कर चलचित्र की भांति सामने आने लगी कि हम दोनों संस्था में साथ में रही। परमपूज्य गुरुदेव श्री तुलसी से योगक्षेम वर्ष में कर्फ्यू के वातावरण में दीक्षा भी साथ में ली। फिर दो वर्ष शिक्षा केन्द्र में प्राकृत में एम. ए. किया।

बीदासर मर्यादा महोत्सव पर हम दोनों को ही अलग-अलग ग्रुप में बहिर्विहार की वंदना करवा दी। तारानगर मर्यादा महोत्सव पर डॉ. वी. सी. लोढा एवं टीम ने पी. एच. डी. के लिए साक्षात्कार किया तथा वहीं डॉक्टरेट की घोषणा हो गई। तत्पश्चात आदरणीया, शासनश्री साध्वी सोमलता जी की हम 5 साल सहवर्ती साध्वियां रही। हम दोनों गोचरी, वस्त्र प्रक्षालन आदि क्रियाएं साथ में ही किया करती।

मैंने देखा उनका सहज, सरल स्वभाव था। उनकी सहनशीलता गजब की थी। उनके आवेश-आवेग प्रतनु थे। अप्रमत भावों में विहरण करने की उनकी मानसिकता स्तुत्य थी। काम के समय काम, बाकी अपने आपमें रहती थी। 'न ऊधो का लेना न माधो को देना' कहावत के अनुसार वे किसी प्रपंच में भाग नहीं लेती थी। गुरू और अग्रणी के निर्देश के प्रति बहुत सजग थी। अपने कर्तव्य के प्रति सचेष्ट थी।

आज वे सदेह हमारे बीच में नहीं है पर उनके सद्गुणों की सौरभ रह-रहकर मेरे मन को सुवासित कर रही है। आशा थी कि शायद योगक्षेम वर्ष में मिलना हो जाए पर नियति को यह मान्य नहीं था इसलिए वे हमारे मध्य से कूच कर गई। पर उनकी यशः परिमल सदैव हमारे मन-मस्तिष्क को स्पर्श करती रहेगी। इसमें कोई संदेह नहीं है।

सतिवर संचित की जय-जय

● साध्वी प्रशमरति आदि साध्वी वृन्द ●

साध्वीश्री संचितयशाजी ने जीवन सफल बनाया।
संथारा कर निज आत्मा को कुन्दन सम चमकाया।
सतिवर संचित की जय-जय-2

श्री सरदारशहर भूमि है सचमुच ही बड़भागी,
चण्डालिया कुल की यह लाल लाडली है सौभागी।
लक्ष्मी मानो घर आईऽऽ, परिजन मन हर्ष सवाया।।

चन्देरी की पुण्य धरा पर संयम जीवन पाया,
गुरु तुलसी की मिली सन्निधि मन उपवन सरसाया।
महाश्रमण की कुशल शासनाऽऽ, जीवन धन्य बनाया।।

साध्वी सोमलता जी की सेवा साधी सुखदाई,
सहज, सरल मुस्काता चेहरा दीप रही पुण्याई।
प्रबल दीपती पुण्याई कोऽऽ, सादर शीष झुकाया।।

तन में देखी प्रबल वेदना पर मन में थी समता,
अपनत्व भाव था बड़ा गजब का सबके मन को हरता।
साध्वी शकुंतला रक्षितऽऽ, जाग्रत ने साझ दिराया।।

सोई शक्ति जगाकर शूर वीरता है दिखलाई,
मन मजबूत बनाकर अनशन से है प्रीत लगाई।
मुम्बई महानगरी में तुमनेऽऽ, नव इतिहास रचाया।।

महातपस्वी महाश्रमण से शासन माली पाए,
मोक्ष मार्ग पर चलने की शक्ति गुरु हमें दिराए।
अमित शक्ति का परिचय देकरऽऽ, आत्म चमन सरसाया।।

लय : माइन-माइन

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
19 मई - 25 मई, 2025
हे प्रभो! यह तेरापंथ

'शासनश्री' साध्वी मदनश्रीजी के प्रयाण पर चारित्रात्माओं के उद्‌गार

सरलता एवं सौम्यता की साक्षात् प्रतिमूर्ति थी – ‘शासनश्री’ साध्वी मदनश्री

● साध्वी मंजुयशा ●

‘शासनश्री’ साध्वी मदनश्रीजी मेरे संसारपक्षीय मौसी लगती थीं। बीदासर में वैद परिवार में जन्मी। पिता इन्द्रचंद, मातुश्री लक्ष्मी देवी से अच्छे संस्कारों का बचपन में ही सिंचन हुआ। चार भाई व आप तीन बहन कुल सात भाई-बहन थे। साधु-संतों का ठिकाना पास में होने से निरंतर उनका आध्यात्मिक सहयोग मिलता गया। आपके भीतर वैराग्य भावना जागृत हुई। 16 वर्ष की उम्र में आचार्य तुलसी से संयम का अमूल्य रत्न प्राप्त हुआ। अपने इस संयम के अमूल्य रत्न को सदैव सुरक्षित रखा। ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप की पवित्र साधना-आराधना से उसे उज्ज्वल और पवित्र बनाया।

साध्वी रायकुमारीजी, साध्वी कानकुमारीजी के पावन साए में 58 वर्ष तक रहकर जीवन में अनेक प्रगति के द्वार खोले। जीवन को कलात्मक बनाने के साथ-साथ कला के क्षेत्र में भी जैसे मुखवस्त्रिका बनाना, पात्री रंगना, ओघा बनाना, सिलाई करना आदि क्षेत्रों में निष्णात बन गईं। स्वयं तो बनीं और दूसरों को भी बड़ी मेहनत से उत्साहपूर्वक सिखाती थीं। समय-समय पर अनेक गीत, मुक्तक, कविताओं की भी रचना करती रहती थीं। मेरे पर भी उनका अनंत उपकार है। साधना-संयम पथ पर चलने की भावना जागृत करने में उनका बहुत बड़ा योग है। इसके कारण ही गुरु चरणों में दीक्षित हुई और ‘शासनश्री’ साध्वी अशोकश्रीजी के पावन साए में रहकर ज्ञान, दर्शन, चारित्र के क्षेत्र में सतत आगे बढ़ रही हूं।

‘शासनश्री’ साध्वी मदनश्रीजी के जन्म के क्षणों की साक्षी तो नहीं थी, लेकिन उनके अंतिम क्षणों की साक्षी बनने का स्वर्णिम अवसर प्राप्त हुआ। साध्वीश्री बीदासर समाधि केंद्र में करीब 15 वर्ष स्थिरवास रही। उनका जीवन अनेक विरल विशेषताओं का पुंज था। सरलता, विनम्रता, व्यवहार-कुशलता, मिलनसारिता, मधुर भाषिता, चेहरे पर सौम्यता, धीरता, गंभीरता, स्वाध्यायशीलता, सेवाभावना, प्रमोद भावना आदि सद्‌गुणों से आपने साधु-साध्वियों का ही दिल नहीं जीता, अपितु आपके दर्शन करने वाले हर श्रावक-श्राविका, युवा, युवतियों एवं बालक-बालिकाओं का भी दिल जीता। उन्होंने सबको धार्मिक प्रेरणा द्वारा प्रेरित भी किया, आध्यात्मिक बोध भी दिया। आज भी उनकी स्मृतियां सबके स्मृति-पटल पर अंकित हैं।

साध्वी मदनश्रीजी की उम्र करीब 92 वर्ष हो चुकी थी। सन 2020 एवं सन् 2025 की चाकरी करने का अवसर मिला। जीवन के अंतिम 2 महीनों में असाता वेदनीय कर्म का प्रबल उदय। शरीर में एक से बढ़कर एक घोर वेदना। यह कोई वेदना थी या कोई उपद्रव या कोई परीक्षा, कुछ पता नहीं। एक वेदना शांत नहीं होती कि दूसरी वेदना, दूसरी वेदना शांत नहीं होती तो तीसरी वेदना घेरा डाल देती। इस प्रकार बीमारी पर बीमारी, पता नहीं उनकी कितनी परीक्षा हुई। मेरी सहवर्ती साध्वी चिन्मयप्रभाजी, साध्वी इन्दुप्रभाजी एवं साध्वी मानसप्रभाजी ने जो दिन-रात उत्साहपूर्वक सेवा करके महान निर्जरा की है, उसका मेरे मन में पूर्ण तोष है। यह सब संघ एवं संघपति की असीम कृपा का ही प्रसाद है।

एक तरफ वृद्धावस्था, दूसरी तरफ वेदना, किन्तु साध्वीश्रीजी का मनोबल एवं आत्मबल बहुत ही दृढ़ रहा। उनके फौलादी संकल्प ने आने वाली विकट परिस्थितियों को भी परास्त कर दिया। वे कभी घबराईं नहीं, कतराईं नहीं। वे बार-बार एक ही वाक्य कहती रहतीं—मेरे असाता वेदनीय कर्म का उदय है। मैं आने वाली वेदना को साम्यभाव से सहन करूंगी और कर्म काटूंगी। इसी भव में मेरे कर्म हल्के हो रहे हैं। रात में नींद न आने पर यही जप करती रहतीं—₹आत्मा भिन्न, शरीर भिन्न है।₹ इस वाक्य को मानो उन्होंने आत्मसात कर लिया था। किसी के साता पूछने पर सदैव यही कहतीं—₹मेरा मानसिक परम आनंद है।₹

उन्होंने परम पूज्य गुरुदेव के श्रीचरणों में अपने 72 वर्ष के संयमी जीवन में जाने-अनजाने में लगे पापों की आलोचना निवेदित की, तो पूज्यप्रवर ने उन्हें 51 घंटे का जप दिया। उन्होंने बड़ी एकाग्रता एवं जागरूकता पूर्वक जप करके गुरु द्वारा प्रदत्त आलोचना को बड़ी सजगता से पूर्ण कर आत्मतोष का अनुभव किया।

काफी दिनों पहले अन्न-पानी से अरुचि हो गई थी। पांच दिन पहले ही आपने संलेखना के लक्ष्य से उपवास प्रारंभ किया। करीब पांच दिन की तपस्या चल रही थी। इस बीच उनकी शारीरिक शिथिलता को देखकर मैंने कई बार विनम्रता पूर्वक अनशन करने का निवेदन भी किया। वे एक ही बात बड़े विश्वास के साथ कहतीं—₹समय आने पर मैं तुम्हें स्वतः ही बता दूंगी।₹ इस प्रकार हम मासी-भान्जी आपस में चर्चा-वार्ता करते रहते, किन्तु वे अपनी ही बात पर अड़ी रहीं।

24 अप्रैल 2025, वि. सं. 2082 वैशाख कृष्णा 11, सायं 5 बजे अकस्मात एक पांव पूरी तरह नीला हो गया। उसमें अत्यंत वेदना होने पर भी एक ही चिंतन—₹आत्मा भिन्न, शरीर भिन्न।₹ यह मंत्र उनके मुख पर रहा। भावों की श्रेणी सतत प्रवर्धमान थी।

रात्रि में लगभग 11 बजे वे एक-एक को याद करके सबसे हार्दिक, करबद्ध हो खमतखामणा कर रहे थे। अचानक साध्वी मदनश्रीजी बुलंद आवाज में बोलीं—₹मंजुयशाजी! अब मेरा समय आ गया है। मुझे संथारा करवा दो। देरी मत करो।₹ तत्काल मैंने उनको उच्च स्वर में आजीवन चौविहार संथारा पचखा दिया। देखते-देखते 21 मिनट बाद श्वास की गति रुक गई। आंखें खुलकर पूर्णतः स्थिर हो गईं। वे हमारे बीच से प्रयाण कर गईं। पांच दिन की तपस्या में 21 मिनट के चौविहार अनशन में देवलोक की ओर प्रस्थान कर दिया। एक सहज सरल आत्मा ने समता से कष्ट सहन कर समाधि-मृत्यु का सजगता के साथ वरण किया। जिन भावों से संयम स्वीकृत किया, उन्हीं चढ़ते परिणामों से आचार्य श्री महाश्रमण की शासना में अपनी संयम यात्रा को सानंद संपन्न किया। उस दिव्य आत्मा को श्रद्धा भरा नमन, नमन, नमन।

बड़ी पुण्यवान साध्वी थी

● शासनश्री साध्वी सूरजकुमारी, शार्दुलपुर ●

साध्वी मदनश्री मधुर भाषी, व्यवहार कुशल, मिलनसार, संयम में रमण करने वाले बड़ी पुण्यवान साध्वी थी। भाणजी साध्वी मंजुयशा जी का इस बार सहज संयोग मिल गया और अंतिम समय में तपस्वी जयमुनि का भी योग मिल गया। वे मेरी छोटी बहन से भी बढ़कर थे। हम दोनों का आपस में पुराना संबंध था। दोनों के अग्रगामी माँ जायी बहन की तरह थे। उनकी इतनी मिलनसारिता थी, हमारा मानो सगी बहनों की तरह आपसी स्नेह एवं वात्सल्य भाव था। वे बड़े भाग्यशाली थे। पांच दिन की संलेखना तप में संथारा कर गए। मैं भी इस प्रकार अंत समय में संथारे सहित जाऊं। ऐसा साध्वी मदनश्री जी मुझे साझ देना इसी भावना के साथ।

हर क्षण परमानन्द-परमानन्द की अनुभूति

● साध्वी कार्तिकयशा ●

शासनश्री साध्वी मदनश्रीजी उच्च त्याग, तपोबल, आत्मबल से भौतिक नश्वर देह का त्याग कर चेतना की ऊंचाइयों में विलीन हो गई । उनका यूं चले जाना अभी तक भी मन को गवाही नहीं दे रहा। साध्वी श्री मदनश्री जी का वह हंसता चेहरा, मीठा जयकारा, वत्सलता की वर्षा आत्मीयभाव, प्रमोदभावना, अप्रमत्ता, स्वाध्यायशीलता, सृजनशील रचनात्मकता की वर्षा उत्साही खुशमिजाजी व हर क्षण परमानन्द-परमानन्द अनुभूति भरा आभामण्डल मेरी आँखों में तैर रहा है। मैं अपना परम सौभाग्य मानती हूं कि मुझे बीदासर की दो चाकरी में ‘शासनश्री’ साध्वी मदनश्री जी जैसे माईत की सेवा का अवसर मिला। आपका सतत वरदहस्त, आशीर्वाद, प्रेरणा, प्रोत्साहन ने मुझे सकारात्मक दिशा में गतिशील किया है। उनका माईतपणा, कृपाभाव, अपनापन सदैव स्मृति पटल पर अंकित रहेगा। साध्वी श्री मंजुयशा जी का कितना सुन्दर सुयोग मिला। पूर्ण मनोयोग से सेवा कर उन्हें समाधि प्रदान कर त्याग तपस्या संथारा करवाकर खूब साझ दिया। पूरे वर्ग ने मनोयोग से सेवा की है। मुनिश्री जयकुमार जी का सान्निध्य व दर्शन सेवा का लाभ साध्वी मदनश्री जी के चित्त में प्रसन्नता आह्लाद की प्राप्ति कराने वाला तथा समाधिस्थ होने में योगभूत बना है। साध्वी मदनश्री जी की आत्मा के प्रति अनन्त-अनन्त मंगलकामना। अंतिम लक्ष्य का वरण करें, यही शुभकामना।

सति मदनश्री जी है सुखकारी

● साध्वी वीरप्रभा ●

भैक्षव शासन में धन्य हुई, सति मदनश्री जी है सुखकारी।
महाश्रमण गुरु के चरणों में, निज जीवन नैया को तारी।।

सरदारशहर शुभ दिन आया, तुलसी गुरु कर संयम पाया।
चारित्र बहत्तर वर्षों का, हर पल तेरा मंगलकारी।।

हो वीर भूमि की वीर सुता, इन्दरचंद लक्ष्मी मात-पिता।
थी सहज-सरल प्रभु भक्ति मगन, परमानंद की खिलती क्यारी।।

हंसता-मुस्काता तव आनन, व्यवहार सदा ही मनभावन।
गण-गणपति के संस्कारों से, भरती सबकी मन फुलवारी।।

रोगों ने विकट परीक्षा की, तब तुमने आत्म समीक्षा की।
आत्मा है भिन्न शरीर भिन्न, इस मंत्र से जोड़ी इकतारी।।

कैसे जाना तन को छोड़ूं, इस मनुष्य लोक से मुख मोड़ूं।
पंचोले तप में अनशन कर, सुरगमन की कर ली तैयारी।।

शुभ योग पधारे जय मुनिवर, है चार तीर्थ संगम सुखकर।
मंजुयशा जी सेवा सुखकर, बीदासर केन्द्र समाधि वर।
गुरु कृपा से योग ये वरदाई, समता की जाएं बलिहारी।।

धर दी ज्यो की त्यों यह चादर, निर्मल उज्ज्वल संयम मनहर।
संयम में सहयोगी बनना, पाओ सिद्धि श्री जयकारी।।

लय - महावीर तुम्हारे चरणों में

अक्षय तृतीया पर श्रद्धासिक्त कार्यक्रम

सुजानगढ़

तेरापंथ सभा भवन में 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभा जी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया के कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से हुआ। 'ऊं श्री ऋषभनाथायनमः' मंत्र जप के पश्चात सभा सदस्य केसरी चंद मालू ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। महिला मंडल की बहनों द्वारा सामूहिक गीतिका का संगान किया गया। 'शासनश्री' साध्वी सुप्रभाजी ने भगवान ऋषभ के पारणे का पूरा इतिहास बताया। साध्वी मनीषाश्रीजी ने इस अवसर पर अक्षय तृतीया के महत्व को बताया। सरोज देवी बैद ने अपने विचार व्यक्त किये। सफल संयोजन साध्वी मुकुलयशा जी द्वारा किया गया।

साहुकारपेट, चेन्नई

मोहजीत कुमारजी ठाणा 3 एवं मुनि दीप कुमार जी ठाणा 2 के सान्निध्य मे तेरापंथ जैन विद्यालय, साहुकारपेट, चेन्नई के प्रांगण में अक्षय तृतीया पारणोत्सव का शुभारंभ महामंत्रोच्चार के पश्चात् ऊं ऋषभाय नमः के जप से हुआ। इस अवसर पर मुनि मोहजीत कुमार जी ने भगवान ऋषभ के द्वारा विकास की परम्परा एवं वर्षीतप के महत्व पर प्रकाश डाला। मुनिश्री ने कहा, "जैन परम्परा में अक्षय तृतीया का आध्यात्मिक महत्व प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभ के 400 दिनों की तपस्या के बाद पारणे के दिन के साथ जुड़ा हुआ है। भगवान ऋषभ के अन्तराय कर्म बंधन की मुक्ति प्रपोत्र श्रेयांस के हाथों इक्षु रस के दान से हुई। भगवान ऋषभ इस काल खंड के प्रथम भिक्षु, याचक, केवली, तीर्थंकर के रूप में प्रतिष्ठित हुए।" अपने तृतीय वर्षीतप की सम्पन्नता पर मुनि भव्य कुमार जी ने भगवान् ऋषभ - इक्षु - श्रेयांस से जुड़ी प्रेरणा एवं वर्षीतप के अनुभव साझा किये। मुनि जयेश कुमार जी ने भगवान आदिनाथ के महानतम व्यक्तित्व के कुछ महत्वपूर्ण बिंदुओ पर प्रकाश डालते हुए कहा, "तीर्थंकर ऋषभ पुरुषार्थ चतुष्टयी के पुरोधा थे। वे अपने युग के प्रथम प्रयोगधर्मा प्रवर थे।" इस अवसर पर उन्होंने वर्षीतप कर्ताओं के अनुमोदन मे मधुर स्वर प्रकट किये। मुनि दीपकुमार जी एवं मुनि काव्य कुमार जी ने विचार व्यक्त किए। पारणोत्सव के मुख्य उपक्रम में 18 वर्षीतप तपस्वियों ने संतों को इक्षु रस का दान देकर तप की पूर्णाहूति की। महिला मण्डल ने वर्षीतप गीत का अनुमोदना संगान किया। तेरापंथ सभा अध्यक्ष अशोक खतंग ने स्वागत एवं मंत्री गजेंद्र खांटेड ने आभार प्रकट किया। कार्यक्रम का संचालन मनोज डूंगरवाल ने किया।

अमरनगर, जोधपुर

'शासनश्री' साध्वी सत्यवती जी आदि ठाणा-4 के सान्निध्य में अक्षय तृतीया पावन पर्व का आयोजन किया गया। अक्षय तप के प्रदाता की अभिवंदना में साध्वी रोशनीप्रभा जी ने कहा, "भगवान ऋषभ ने स्वार्थ से परार्थ की ओर बढ़कर दान देने की परम्परा का प्रतिपादन किया। धन्य है मरुदेवा माता जिन्होंने ऋषभ जैसे पूत को जन्म देकर आदि से लेकर अनन्त तक की यात्रा निर्वाह करने का मार्गदर्शन दिया।"

साध्वी शशिप्रज्ञा जी ने गीतिका के द्वारा आदिकर्ता की अभ्यर्थना की व साध्वी पुण्यदर्शना जी ने तप की महत्ता को उजागर किया। अभिव्यक्ति के स्वर में सभा अध्यक्ष सुरेश जीरावला, तेयुप मंत्री देवचन्द तातेड़, महावीर राज गेलड़ा, भवरलाल भंसाली, महिला मण्डल अध्यक्ष दिलखुश तातेड़, सरिता बैद, जयश्री सुराणा ने अपने भावों को शब्द व गीतिका के द्वारा प्रभु की अर्चना की। कार्यक्रम का प्रारम्भ तेयुप के मंगलाचरण से हुआ। कार्यक्रम का कुशल संचालन तेयुप उपाध्यक्ष मनसुख संचेती ने किया।

समाना मंडी

साध्वी समन्वयप्रभाजी के सान्निध्य में तेरापंथ सभा भवन, समाना में अक्षय तृतीया का भव्य कार्यक्रम मनाया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री के द्वारा नमस्कार महामंत्र से किया गया। नितिन जैन द्वारा मंगलाचरण किया गया। श्रावक समाज का स्वागत डॉ. हेमराज द्वारा किया गया। अन्य श्रावक-श्राविकाओं द्वारा भी भगवान ऋषभदेव की अभ्यर्थना में भजन व वक्तव्य प्रस्तुत किए गए। ज्ञानशाला, कन्या मण्डल, महिला मण्डल व किशोर मंडल द्वारा भगवान ऋषभ पर एक लघु नाटिका प्रस्तुत की गई। साध्वी समन्वयप्रभाजी ने कहा कि ऋषभ की कहानी भारतीय संस्कृति के आदियुग की कहानी है। अक्षय तृतीया संयम व त्याग की चेतना का पर्व है। आज के दिन को बड़े उत्साह व उल्लास के साथ मनाया जाता है। साध्वी संयमप्रभा जी ने भगवान ऋषभ पर सुंदर कविता प्रस्तुत की। कार्यक्रम का कुशल संचालन साध्वी चारुलता जी द्वारा किया गया। कार्यक्रम में नजदीकी क्षेत्रों से काफी संख्या में श्रावक समाज की उपस्थिति रही। समाना की बहन खुशी जैन के ने एकासन के वर्षीतप का अनुमोदन किया गया।

नोखा

'शासनगौरव' साध्वी राजीमती जी के सान्निध्य में अक्षय तृतीया का भव्य आयोजन किया गया। साध्वी राजीमती जी ने वर्षीतप को विशेष तप बताया। साध्वियों द्वारा सामूहिक गीत का संगान किया गया। वर्षीतप करने वाली बहनों ने साध्वीश्री से उपवास, बेले का प्रत्याख्यान किया। लुणावत, पारख, भुरा, डागा, मरोठी, सेठिया, रांका परिवार ने अपने भावों से तपसन बहनों को बधाई दी।

नगर पालिका अध्यक्ष निर्मल भुरा ने सभी बहनों को को तप की शुभकामनाएं दी। सभा के मंत्री मनोज घीया, तेयुप से निर्मल चोपड़ा, मंत्री सुरेश बोथरा, इन्द्रचन्द बैद कवि आदि श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

महिला मंडल अध्यक्ष सुमन मरोठी ने वर्षीतप करने वाली सातों बहनों का भावों से स्वागत किया। मंडल की बहनों ने मंगलाचरण की प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन महिला मंडल मंत्री प्रीति मरोठी ने किया।

अक्षय तृतीया एवं वर्षीतप अभिनंदन समारोह

लाडनूं।

'शासनगौरव' साध्वी कल्पलता जी एवं वृद्ध सेवा केंद्र व्यवस्थापिका साध्वी कार्तिकयशा जी के सान्निध्य में सेवा केंद्र में अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर मूल ठिकाने में विराजित साध्वी शीलवती जी के 32वें वर्षीतप परिसम्पन्नता के अवसर पर कार्यक्रम आयोजित हुआ।

'शासनगौरव' साध्वी कल्पलता जी ने नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की।

महिला मंडल की बहनों द्वारा मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। साध्वी शीलवती जी के लिए साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी द्वारा प्रदत्त संदेश का वाचन साध्वी कल्पलता जी ने किया। जैन विश्व भारती संचालिका समिति सदस्य राजेंद्र खटेड़, तेरापंथी सभा के कोषाध्यक्ष महेंद्र बाफना, उपासिका डॉ. सुशीला बाफना, अणुव्रत समिति संरक्षक शांतिलाल बैद, तेरापंथ सभा पूर्व अध्यक्ष सुपारस बैद, ज्ञानशाला से नीति खटेड़ ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वियों एवं समणियों की सामूहिक गीतिका से सेवा केंद्र गुंजायमान हो गया। साध्वी कंचनरेखा जी एवं समणी मंजुलप्रज्ञा जी ने अपने भावों की अभिव्यक्ति दी। साध्वी कार्तिकयशा जी ने कहा– "जब हमें शरीर मिला है तो हमें तप करके कर्मों का नाश करना चाहिए।

अक्षय तृतीया का दिन बहुत ही पावन है, आज के दिन ही भगवान ऋषभ प्रभु का पारणा हुआ एवं तेरापंथ के द्वितीय आचार्य भारीमल जी का जन्म हुआ।"

शासनगौरव साध्वी कल्पलता जी ने कहा कि साध्वी शीलवती जी में अपने मां के संस्कार हैं। आपकी माताश्री भी बहुत तपस्या करती थीं। चर्तुविध धर्म संघ ने आपके वर्षीतप की आध्यात्मिक अनुमोदना की। संचालन साध्वी युक्तिप्रभा जी ने किया।

अभिवंदना कार्यक्रम के अंतर्गत भक्ति संध्या का आयोजन

सरदारपुरा जोधपुर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद, सरदारपुरा, जोधपुर द्वारा आचार्य महाश्रमण अभिवंदना कार्यक्रम के अंतर्गत भक्ति संध्या का आयोजन ओसवाल कम्यूनिटी हॉल सरदारपुरा, जोधपुर में किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत नमस्कार महामंत्र से स्थानीय गीतकार वैभव भंडारी ने की। तेयुप सरदारपुरा के अध्यक्ष मिलन बांठिया ने सभी का स्वागत किया।

गायक दर्शन चोपड़ा ने अपने मधुर सुरों से दर्शकों का मन मोह लिया। भक्ति संध्या में करीब 300 दर्शकों की उपस्थति रही। परिषद के शाखा प्रभारी संदीप ओस्तवाल, अभातेयुप सदस्य रोशन बागरेचा, रोशन नाहर एवं विभिन्न संस्थाओं के पदाधिकारियों की विशेष उपस्थति रही। कार्यक्रम का सफल संयोजन संगठन मंत्री धीरज बेंगानी ने किया। अंत में तेयुप मंत्री देवीचंद तातेड़ ने सभी का आभार प्रकट किया।

वर्षीतप कार्यक्रम अभिनंदन

नोखा।

डॉ. मुनि अमृत कुमार जी के सान्निध्य में वर्षीतप करने वाले तपस्वियों का अभिनन्दन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

भगवान ऋषभदेव के पारणे का वर्णन करते हुए और अक्षय तृतीया का महत्व बताते हुए डॉ. मुनि अमृत कुमार जी ने कहा कि वर्षीतप एक कठिन साधना है। एक दिन उपवास और एक दिन पारणा इसका मूल आधार है। मुनि उपशम कुमार जी ने अक्षय तृतीया का महत्व बताते हुए जीवन में तप, जप और सामायिक आराधना की प्रेरणा दी। संयम ग्रहण करने के 6 वर्ष पूर्ण होने पर उन्होंने कहा कि जीवन में अध्यात्म कि शरण रहे और आनंद और मंगल भाव रहे।

अनुशासन, संघ सेवा और समर्पण कि भावना का विकास मुझमें होता रहे। मुख्य अतिथि नगर पालिका अध्यक्ष निर्मल कुमार भूरा ने तप की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए तपस्वी बहनों के प्रति मंगल कामना व्यक्त की। वर्षीतप करने वाली बहनों के प्रति महिला मंडल और युवक परिषद ने सुमधुर गीतिका का संगान किया।

सभा के पूर्व अध्यक्ष इन्द्र चन्द बैद कवि, उपासक प्रकाश चन्द्र पारख, सभा मंत्री मनोज घीया, उपाध्यक्ष महावीर नाहटा, सुशील कुमार भूरा, महिला मंडल अध्यक्ष सुमन मरोठी ने तप का महत्व बताते हुए तपस्वियों का परिचय दिया एवं अभिनंदन पत्र का वाचन किया।

कुशल संचालन उपासक अनुराग बैद ने किया। कार्यक्रम में अनेक गणमान्य व्यक्तियों कि उपस्थित रही एवं वर्षीतप करने वाली बहनों का साहित्य द्वारा सम्मान हुलासमल डागा द्वारा किया गया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र 'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स' में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. समाचार मोबाइल नं. 8905995002 पर व्हाट्सअप अथवा abtyptt@gmail.com पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::
सेवा संस्कार संगठन
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

एक बूंद एक सागर-जल संरक्षण कार्यक्रम का आयोजन

गंगाशहर।

अभातेममं के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल गंगाशहर द्वारा आयोजित कार्यशाला में बोथरा भवन में उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमल कुमार जी ने कहा कि जैन धर्म में सुख-दुःख का कर्ता स्वयं को माना गया है।

लोग आज के इस माहौल में भौतिकता में बह रहे हैं। उन्होंने पानी का आध्यात्मिक महत्व बताते हुए फरमाया कि पानी की एक बूंद में असंख्य जीव होते हैं और लोग स्नान आदि कार्यों में पानी का दुरुपयोग करते हैं। पुराने ज़माने में बरसात के पानी को भी सहेज कर रखा जाता था, जो पूरे घर परिवार के लिए, सभी कार्यों के लिए पर्याप्त होता था।

मुनिश्री ने सबको प्रेरणा देते हुए कहा- जल है तो हमारा कल है। जल के प्रति विवेक और संयम होना चाहिए। अनावश्यक बिजली हो चाहे पानी उसका दुरुपयोग न करे। पाँच तिथियों को नहाने का त्याग करें, नहाने के लिए पानी की सीमा करे। जागरूक बने जिससे हम अनन्त संसारी से परित संसारी बने।

महिला मण्डल जल सरक्षण के रूप में ऐसी कार्यशाला का आयोजन कर जन-जन को जागृत कर रही है। 'हर बूंद अनमोल' के अंतर्गत स्कूल, कॉलेज, हॉस्पिटल में पोस्टर के माध्यम से जल संरक्षण का प्रचार प्रसार किया गया।

मंडल की मंत्री मीनाक्षी आंचलिया ने सभी का स्वागत किया और बताया 'एक बून्द एक सागर' जल संरक्षण पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन भी किया गया है। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता जैन कन्या महाविद्यालय के प्रो. धनपत जैन ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा महिला मण्डल द्वारा वैश्विक समस्याओं पर प्रहार किया जाता है, उनके प्रति सबको जागरूक करने का प्रयत्न किया जाता है ताकि यह समस्याएं अपना भयावह रूप लें उससे पहले हम सचेत हो जाए। आज हम सब व्यक्तिगत रूप से प्रण लें कि मेरे कारण पानी का अपव्यय न हो।

मण्डल अध्यक्ष संजू लालाणी ने बताया कि जल सेवा-मानव सेवा के अन्तर्गत गर्मी के मौसम में एक वाटर कूलर मय वॉटर प्यूरीफायर महिला मण्डल द्वारा राजकीय सैटेलाइट हॉस्पिटल गंगाशहर में लगाया गया है। डॉ. मुकेश वाल्मीकि, गंगाशहर नागरिक परिषद के अध्यक्ष जतन दुगड़ आदि ने इस कार्य के लिए मंडल का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का सुन्दर संचालन कनक गोलछा ने किया।

एक बूँद : एक सागर - जल संरक्षण पर कार्यक्रम

हैदराबाद।

तेरापंथ महिला मंडल, हैदराबाद द्वारा साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी के सान्निध्य में अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल द्वारा निर्देशित "एक बूँद : एक सागर-जल संरक्षण" कार्यशाला रखी गई।

नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला का शुभारंभ किया गया।

इस कार्यशाला में साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी ने जल के महत्व को रेखांकित किया।

साध्वी मयंक प्रभा जी द्वारा भी विषय पर प्रकाश डाला गया। मंत्री सुशीला मोदी ने सभी का स्वागत किया। साध्वी दक्षप्रभा जी व साध्वी मेरूप्रभा जी द्वारा गीतिका का संगान किया गया। इस विषय को और अधिक विशद तरीके से कवर करने हेतु निबंध प्रतियोगिता व चित्रकला प्रतियोगिता भी रखी गई, जिसका विषय था "भविष्य में पानी या भविष्य पानी पानी।"

निबंध प्रतियोगिता में 16 प्रविष्टियां तथा चित्रकला प्रतियोगिता में 8 प्रविष्टियां प्राप्त हुई।

कार्यक्रम की संयोजिका संगीता गोलछा व डिंपल बैद थीं। संगीता गोलछा ने कार्यक्रम का संचालन किया।

एक बूंद एक सागर जल संरक्षण कार्यशाला का आयोजन

आर आर नगर।

अभातेममं के निर्देशानुसार तेरापंथ महिला मंडल आरआर नगर द्वारा 'एक बूंद एक सागर - जल संरक्षण' कार्यशाला का आयोजन किया गया।

सामूहिक नमस्कार महामंत्र से कार्यशाला का शुभारंभ किया गया। अध्यक्ष सुमन पटावरी ने सभी बहनों का स्वागत किया।

मंडल की बहनों द्वारा प्रेरणा गीत का संगान किया गया।

मुख्य वक्ता बिंदु मेहता का परिचय कार्यशाला की संयोजिका जया शामसुखा ने दिया। उन्होंने जल संकट की समस्या के समाधान में जैन धर्म के सिद्धांतों की उपयोगिता के बारे में बताया तथा पानी के अनावश्यक उपयोग को कम करने की प्रेरणा दी।

बिंदु मेहता ने सभी को जल का दुरुपयोग नहीं करने का संकल्प भी करवाया।

अध्यक्ष सुमन पटावरी ने अपनी पूरी टीम के साथ में जल संरक्षण के पोस्टर का अनावरण किया।

मंडल की बहनों ने जन जागरूकता हेतु सार्वजनिक स्थानों पर पोस्टर लगाये। इसी के साथ महिला मंडल द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता में 'भविष्य में पानी या भविष्य पानी-पानी' का आयोजन भी किया गया। आभार मंत्री पदमा महेर ने किया।

नेटवर्किंग इवेंट का आयोजन

वेस्टर्न मुंबई।

तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम की फेमिना विंग द्वारा बुक्स, ब्रूज और ब्रिलियंट कन्वर्सेशन नेटवर्किंग इवेंट का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम सांताक्रूज़ स्थित भव्य ताज होटल में आयोजित किया गया।

इस कार्यक्रम के माध्यम से पुस्तक प्रेमियों, प्रोफेशनल्स और संवाद में रुचि लेने वाले व्यक्तियों को एक साथ लाया, जहाँ सुबह की कॉफ़ी, किताबों और सार्थक चर्चाओं के साथ-साथ फेमिना सदस्यों को नेटवर्किंग का भी अवसर मिला।

कार्यक्रम में TPF फ्यूचुरा विंग कन्वीनर अरुणा बांठिया और TPF मुंबई ज़ोन की जॉइंट सेक्रेटरी बबिता जैन की विशेष उपस्थिति रही। TPF मुंबई वेस्टर्न फेमिना विंग कन्वीनर पूजा धारेवा ने सभी का गर्मजोशी से स्वागत किया।

इसके बाद गीतिका कोठारी ने मुख्य वक्ता नितिन एल. शाह का परिचय कराया। इस कार्यक्रम में 27 फेमिना सदस्य शामिल हुईं। कार्यक्रम में Caprese को आर्थिक सहयोग एवं ग्रंथ बुकस्टोर के मालिक परेश जैन और उनकी टीम को कार्यक्रम की व्यवस्था में मदद के लिए विशेष धन्यवाद दिया गया।

सोनल चोरड़िया ने कार्यक्रम के समापन पर आभार ज्ञापन दिया। पूजा धारेवा, सोनल चोरड़िया, गितिका कोठारी और प्रेक्षा चोरड़िया की संयुक्त मेहनत से कार्यक्रम सफल बना।

प्रेक्षा ध्यान का अभ्यास हमें आत्म साक्षात्कार की ओर ले जाता है

गंगाशहर।

आचार्य तुलसी शांति प्रतिष्ठान, नैतिकता का शक्तिपीठ द्वारा आयोजित एक दिवसीय प्रेक्षा ध्यान शिविर के संभागी साधकों को संबोधित करते हुए उग्रविहारी तपोमूर्ति मुनि कमलकुमार जी ने कहा कि, "प्रेक्षा ध्यान एक ध्यान की तकनीक है जो जैन दर्शन पर आधारित है, जिसका उद्देश्य मन को शुद्ध करना, स्वयं को जानना और आत्म साक्षात् करना है। ध्यान के माध्यम से हम नकारात्मक विचारों और भावनाओं से मुक्त होकर मन को शुद्ध कर सकते है।

आदमी को प्रतिक्रिया से बचना चाहिए और शुभ भाव में रहते हुए अपनी दिनचर्या में ध्यान का अभ्यास बढ़ाना चाहिए।"

शिविर का शुभारंभ मुनि कमलकुमार जी और मुनि श्रेयांशकुमार जी के सान्निध्य हुआ। शिविर में सामायिक, अर्हत वंदना, प्रार्थना, वृहद मंगल पाठ के साथ प्रशिक्षक धीरेंद्र बोथरा एवं संजू लालानी के द्वारा विभिन्न सत्रों में योगाभ्यास, आसन, प्राणायाम, ध्यान, कायोत्सर्ग एवं अनुप्रेक्षा का प्रयोग करवाया गया। मुक्ता सेठिया ने महिला संभागियों को योगाभ्यास करवाया।

इस एक दिवसीय शिविर में कुल 61 साधकों ने भाग लिया। संभागियों द्वारा 400 से अधिक सामायिक साधना, पांच उपवास एवं एक एकासन तप भी किया गया।

ज्योति चौधरी ने डिप्रेशन से बचने के बारे में अपने विचार रखे। शिविर में जिज्ञासा - समाधान का क्रम भी आयोजित किया गया।

इंदरचंद सेठिया, सुंदरलाल छाजेड़, किरणचंद लूनिया, अभिषेक पुरोहित ने शिविर के प्रति अपने उद्गार व्यक्त किये।

'संगठन में शक्ति' कार्यशाला का आयोजन

लिलुआ।

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य में व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'संगठन में शक्ति' का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद् लिलुआ द्वारा तेरापंथ भवन में आयोजित किया गया।

इस अवसर पर उपस्थित युवा वर्ग एवं जनसमुदाय को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा– सामाजिक एवं धार्मिक चेतना के जागरण का एक सशक्त माध्यम है-संगठन। संगठन में शक्ति होती है। शक्ति शक्ति को आकर्षित करती है। शक्ति के अभाव में, दायित्व बोध के अभाव में अच्छे से अच्छा संगठन भी तिनकों की तरह बिखर जाता है। उद्देश्य और दायित्व बोध के साथ चलने वाला छोटे से छोटा संगठन भी आकाश व्यापी ऊँचाई को प्राप्त हो सकता है। तेरापंथ युवक परिषद तेरापंथ धर्मसंघ के युवाओं का संगठन है। इसके द्वारा सेवा, संस्कार व संगठन के त्रिआयामी सूत्रों पर धार्मिक एवं सामाजिक कार्य किये जाते हैं। मुनिश्री ने आगे कहा– संगठन को शक्तिशाली बनाने के लिए मैत्री, प्रमोदभावना, सामंजस्य, करुणा, सहिष्णुता, समर्पण, व्यसन मुक्ति जैसे गुणों को अपेक्षा रहती है। विचार भेद हो सकता है, मनभेद नहीं होना चाहिए। साथियों के साथ विश्वास रखें। एक दूसरे के प्रति प्रमोद भाव रखें, प्रोत्साहित करें, इससे संगठन मजबूत होगा। मुख्य वक्ता पूजा बोथरा ने एक्टिविटी के माध्यम से 'संगठन में शक्ति' विषय पर अपना वक्तव्य देते हुए युवा शक्ति को प्रेरणा प्रदान की। मुनि कुणाल कुमार जी ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ किशोर मंडल द्वारा विजय गीत के संगान से हुआ। स्वागत भाषण तेयुप अध्यक्ष अमित बांठिया ने दिया। कार्यक्रम का आभार एवं संचालन मंत्री जयंत घोड़ावत ने किया। कार्यशाला के प्रथम चरण में परिचय एवं जिज्ञासा समाधान का क्रम रहा। जिसमें युवाओं एवं किशोरों की जिज्ञासाओं का समाधान मुनि श्री द्वारा प्रदान किया गया।

मनुष्य संयम, साधना, आध्यात्मिकता अपनाएं

नोखा। डा. मुनि अमृत कुमार जी के सान्निध्य में एक दिवसीय सघन साधना शिविर का आयोजन किया गया। प्रातः व्यायाम, जप अनुष्ठान, प्रवचन, पच्चीस बोल व्याख्या, प्रेक्षा ध्यान, सामायिक, वक्तृत्व कला, धम्म जागरण आदि प्रयोग करवाये गए। शिविर में बच्चों, महिलाओं, युवकों सभी ने उत्साह से भाग लिया। ईश्वरचन्द बैद ने 'दान, दया, धर्म कैसे और क्यों?' विषय पर अपनी प्रस्तुति दी। सभा मंत्री मनोज घीया, तोलाराम घीया, सीमा घीया आदि का सराहनीय श्रम लगा।

ध्यान, योग और डिप्रेशन कार्यक्रम का आयोजन

साउथ दिल्ली। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में तेरापंथ महिला मंडल, साउथ दिल्ली द्वारा प्रेक्षा प्रवाह की श्रृंखला में डिप्रेशन विषय पर कार्यशाला रखी गई। अध्यात्म साधना केन्द्र महरौली में बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में इस कार्यशाला का सफल आयोजन हुआ।

कार्यक्रम की मंगल शुरुआत मुनिश्री द्वारा नमस्कार महामंत्र के उच्चारण से हुई। सभी उपस्थित बहनों ने शासनमाता द्वारा रचित प्रेरणा गीत का एक स्वर में संगान कर सुमधुर मंगलाचरण किया। अध्यक्ष शिल्पा बैद ने सभी का स्वागत किया। बहुश्रुत परिषद् सदस्य मुनि उदित कुमार जी ने कहा – "नकारात्मक विचार तनाव को जन्म देते हैं, तनाव अवसाद को जन्म देता है और अवसाद पागलपन को जन्म देता है।" कार्यशाला की मुख्य वक्ता देशना और तनिष्का द्वारा विषय का विस्तार से प्रतिपादन किया गया। योग प्रशिक्षक विमल गुनेचा ने ध्यान और योग का अभ्यास कराया। इसके पश्चात निबंध प्रतियोगिता के विजेता मधु बाफना और बबीता जैन को वरिष्ठ कार्यकारिणी सदस्यों द्वारा पुरस्कृत किया गया। मंच संचालन दिशा बाफना ने संभाला। उपाध्यक्ष माया दुगड़ ने आभार ज्ञापन किया। सुसज्जित एवं आकर्षक नवनिर्मित ध्यान कक्ष में 34 बहनों की उपस्थिति रही।

बोलती किताब

आभा मण्डल

अनंत चतुष्टयी की शरण- सचमुच! जब हम अनंत की शरण में जाते हैं, अनंत-चतुष्टयी की शरण में चले जाते हैं तब अनंत चतुष्टयी के स्पंदन से तैजस शरीर और चेतना का कण-कण तादात्म्य स्थापित कर लेता है, तादात्म्य का अनुभव करता है, उस समय हमारी तैजस की धाराएं इतनी फूट पड़ती हैं, फिर किसी का भय नहीं हो सकता।शरण में जाना स्वभाव-परिवर्तन का महत्त्वपूर्ण सूत्र है। जब हम अनंत चतुष्टयी की शरण में जाते हैं, तब हमारे सामने अनंत ज्ञान दौड़ता है, अनंत दर्शन की धाराएं दौड़ती हैं, अनंत आनंद की धाराएं विकसित होती हैं और अनंत शक्ति के अनुभव के बीज फूटने लग जाते हैं।

भावित चित्त शक्तिशाली होता है- एक सामान्य वस्तु है, किंतु उसको भावित करने पर उसकी शक्ति बढ़ जाती है, बिना भावित किए किसी भी वस्तु की क्षमता नहीं बढ़ती। अन्न जब आग पर पकाया जाता है तब वह आग से भावित हो जाता है। रंगीन बोतलों में पानी सूर्य की रश्मियों में रखा जाता है। वह पानी रंग से भावित हो जाता है। सामान्य पानी की जो शक्ति है, उसकी तुलना उससे नहीं हो सकती। उस भावित पानी से असाध्य रोगों की चिकित्सा की जाती है। अनेक रोग मिटते हैं।

ध्यान का उद्देश्य है ज्ञाता को जानना- सम्यग्दृष्टि का अर्थ है—मन को प्रियता और अप्रियता की अनुभूति से मुक्त करना। जब तक हमारा मन प्रियता और अप्रियता की अनुभूति से मुक्त नहीं होता, तब तक हमें सम्यगूदृष्टि उपलब्ध नहीं हो सकती। हम बड़े-बड़े शास्त्रों को रट लें, तत्त्वों के नाम याद कर लें, ग्रंथों का पारायण कर लें, फिर भी हमें सम्यगृदृष्टि उपलब्ध नहीं हो सकती। यदि हम इस प्रियता और अप्रियता की अनुभूति से मुक्त नहीं हैं, यदि हमारा यह संवेदन समाप्त नहीं होता है तो हमें सत्य उपलब्ध नहीं होगा।

दुःख का कारण : काल्पनिक घटनाएं - कुछ आदमी बहुत संवेदनशील होते हैं, कल्पनाशील होते हैं। वे छोटी-सी घटना को भी बड़ी बना देते है, राई का पर्वत कर देते हैं। जिस व्यक्ति ने संवेदन पर नियंत्रण पा लिया, जिस व्यक्ति ने अपनी कल्पनाओं पर नियंत्रण पा लिया, उसके मन में ऐसी शक्ति का जागरण होता है कि वह पर्वत को भी राई बना डालता है। पर्वत जितनी बड़ी घटना को राई जैसी छोटी बना सकता है। घटना कभी बड़ी नहीं होती। बड़ी होती है हमारी संवेदना और बड़ी होती है हमारी अनुभूति की प्रक्रिया।

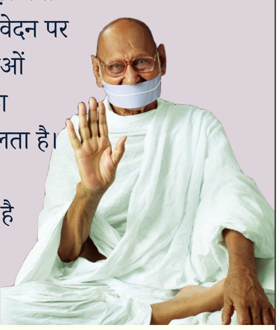

पुस्तक प्राप्ति के लिए संपर्क करें :
आदर्श साहित्य विभाग जैन विश्व भारती
+91 87420 04849 / 04949 https://books.jvbharati.org books@jvbharati.org

मंगल भावना समारोह

रायसिंहनगर।

तेरापंथ भवन रायसिंहनगर में मुनि सुमति कुमार जी आदि ठाणा के सान्निध्य में मंगल भावना समारोह कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

मुनिश्री ने कहा, "साधु संतों का प्रवास तभी सार्थक है जब भाई-बहन उनके उपदेशों को ग्रहण कर जीवन में बदलाव लाकर आत्म कल्याण के पथ प्रशस्त करें।"

संतों के लिए स्वागत व विदाई को एक समान बताते हुए उन्होंने 25 दिन के प्रवास की संपन्नता पर क्षमायाचना की। उन्होंने श्रावक-श्राविकाओं को प्रत्येक शनिवार शाम 7 से 8 बजे तेरापंथ भवन में सामूहिक सामायिक करने, प्रत्येक रविवार को बच्चों की ज्ञानशाला चलाने और हर महीने शुक्ल पक्ष की तेरस को आचार्य भिक्षु की धम्म जागरणा करने की प्रेरणा दी।

श्रद्धालुओं ने संतों को विदाई देते हुए 25 दिन में हुए अविनय, अशातना के लिए क्षमा याचना की। सभी संस्थाओं के पदाधिकारियों, सदस्यों और ज्ञानशाला के बच्चों आदि अनेकों वक्ताओं ने कविता, मुक्तक, वक्तव्य, परिसंवाद व गीतिकाओं से संतों को विदाई दी और उनकी आगामी यात्रा के प्रति मंगल कामना व्यक्त की।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
19 मई - 25 मई, 2025

ज्ञान और उसके आचरण से मैन बनता है गुड मैन : आचार्यश्री महाश्रमण

काणोदर।
8 मई, 2025

शान्तिदूत आचार्यश्री महाश्रमणजी पालनपुर का त्रिदिवसीय प्रवास संपन्न कर अपनी धवल सेना के साथ लगभग नौ किमी का विहार कर काणोदर के एस. के. एम. हाई स्कूल में पधारे। पदार्पण हुआ। पूज्यवर ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि चार बातें बताई गई हैं — ज्ञान, दर्शन, चरित्र और तप। ज्ञान के द्वारा प्राणी पदार्थ को जानता है। बुद्धि है, बुद्धि का उपयोग होता है, तो आदमी ज्ञान प्राप्त कर लेता है। ज्ञान पर श्रद्धा दर्शन से होती है।

जान लिया, श्रद्धा हो गई, तो फिर व्यक्ति जीव को नहीं मारता है। मारने का त्याग कर लेता है, तो वह चरित्र बन जाता है। फिर वह तपस्या करता है। उससे पाप कर्म झड़ते हैं, आत्मा शुद्ध बनती है। ज्ञान का जीवन में बहुत महत्व है। उसे समझोगे तभी वह भीतर में उतरेगा। विद्यालयों में भी ज्ञान दिया जाता है। विद्यार्थी लाभान्वित होते हैं। अध्यापक ज्ञान देने का प्रयास करते हैं। विद्यार्थी के व्यक्तित्व का निर्माण किया जाता है। ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार देने का प्रयास भी चलता रहे।

विद्यार्थी में गुस्सा न हो, भाषा सभ्य हो। किसी को बिना मतलब कष्ट न दें — यह अहिंसा का संस्कार है। जीवन में ईमानदारी का संस्कार भी आए। ईमानदारी सर्वोत्तम नीति है — यह बात जीवन में आए। जीवन में नशामुक्ति रहे। विद्यार्थी का ज्ञान बढ़े। कोरा ज्ञान अधूरा है, तो कोरा चारित्र भी अधूरा है। ज्ञान के साथ चरित्र हो तो पूर्णता आ सकती है।

23 वर्ष पूर्व पूज्य आचार्यश्री महाप्रज्ञजी इसी विद्यालय में पधारे थे। जीवन में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति रहे। विद्यार्थी अच्छे होते हैं, तो देश और समाज को सेवा दे सकते हैं। वे विश्वविख्यात बन सकते हैं। प्रार्थना सभा में जीवनोपयोगी संस्कार दिए जाएँ, तो वह विद्यार्थी जीवन में कल्याणकारी सिद्ध हो सकते हैं।

शिक्षा से व्यक्ति लर्निंग और अर्निंग का कार्य कर सकता है। पढ़ाई सिर्फ कमाई के लिए न हो। बौद्धिकता से अच्छा कार्य, अच्छी सेवा की जा सकती है। दूसरों को आध्यात्मिक शांति पहुंचा सकते हैं। अणुव्रत के छोटे-छोटे नियम व्यक्ति को संस्कारी बना सकते हैं। शिक्षा के साथ जीवन-विज्ञान का पाठ्यक्रम चले, तो जीवन जीने का तरीका ज्ञात हो सकता है। पुरुषार्थ करने से अच्छी निष्पत्ति आ सकती है। अच्छे शिक्षण से अच्छा निखार आ सकता है। मैन 'गुड मैन' बने।

विद्यालय में अनुशासन की भी बात होती है। जब कोई विद्यार्थी बड़े पद पर आ जाता है, तो उसका विद्यालय के प्रति अहोभाव जागता है कि मैं अमुक विद्यालय में पढ़ा था। विद्या संस्थान ही मूलतः बड़ी सेवा का अवसर है। विशेष अवसरों पर अच्छी प्रेरणाएँ दी जा सकती हैं। इंसान अच्छा बन जाए। जीवन में नैतिकता आए। अच्छे नागरिक बनें।

पूज्यवर के स्वागत में विद्यालय की प्रिंसिपल बिन्दुबेन ठक्कर एवं उपाध्यक्ष मोहम्मद भाई सुरसुरा ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। मुनि अक्षयप्रकाशजी ने भी विचार व्यक्त किये।

कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

धर्म से बनाएँ इस दुर्लभ मानव जीवन को सफल : आचार्यश्री महाश्रमण

तेनीवाड़ा।
9 मई, 2025

वीतराग पुरुष आचार्यश्री महाश्रमणजी लगभग 13 किमी का विहार कर तेनीवाड़ा के मातुश्री मोंघीबेन रामजीभाई उपलाणा विद्यालय परिसर में पधारे। पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए युगपुरुष ने फरमाया कि शास्त्र में कहा गया है — मनुष्यों का जीवन वृक्ष के पके हुए पत्ते के समान है। जैसे वह पत्ता एक दिन गिर जाता है, उसी प्रकार मनुष्य का जीवन भी एक दिन समाप्त हो जाता है। यह जीवन की अनित्यता है। इसलिए संदेश दिया गया है— "गौतम! समय मात्र भी प्रमाद मत करो।"

व्यक्ति के लिए यह संदेश है कि यदि तुम मोह-माया और भौतिकता में रचे-पचे रहते हो, तो यह स्मरण रखना चाहिए कि यह जीवन अशाश्वत है। दुनिया में कोई भी अमर नहीं है। जीवन अस्थायी है, आत्मा ही आगे जाती है। व्यक्ति सोचे — मैं विषय-भोगों में आसक्त हूँ, इससे क्या लाभ होगा? मैं धर्म का कार्य करूँ — वह साथ जाएगा। अध्यात्म, निर्मलता, उज्ज्वलता ही साथ जा सकेगी।

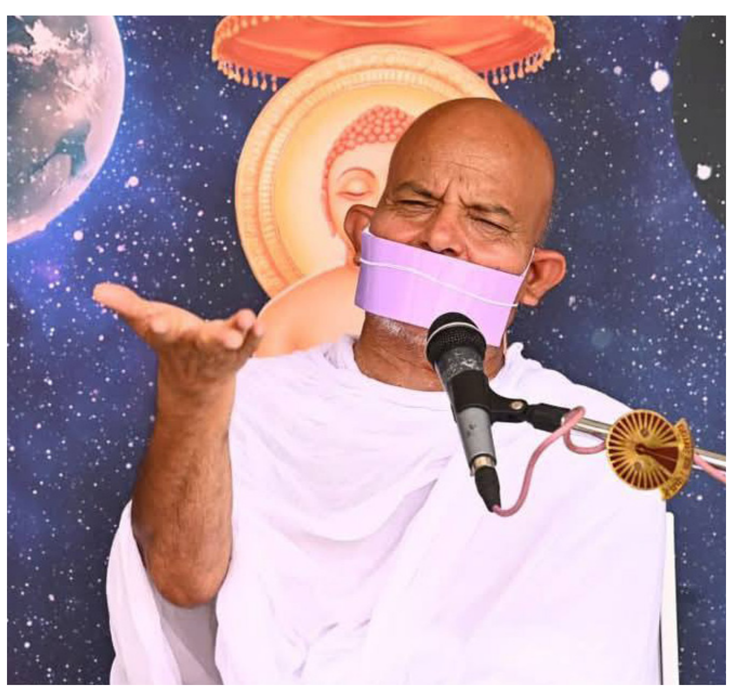

कई बार तो पता ही नहीं चलता कि जीवन कब पूरा हो जाए। मृत्यु के आने के अनेक द्वार हैं। दुर्लभ मानव जीवन हमें प्राप्त हुआ है — हमें धर्म के मार्ग पर चलना चाहिए, जीवन में ईमानदारी रखनी चाहिए। धर्म करने से जीवन सफल और सार्थक हो सकता है। संयोग का वियोग भी होता है। जैसे धर्मशाला में राही आते हैं और चले जाते हैं, वैसे ही व्यक्ति आता है और चला जाता है। आत्मा हमारी स्थायी है, अछेद्य है; शरीर अशाश्वत है। हम जैसा कर्म करते हैं, वैसा फल मिलता है। मानव जीवन मिला है, तो बुरे कार्यों से बचें, अच्छे कार्य करें। इस दुर्लभ जीवन का सदुपयोग करें। जीवन में सद्भावना, नैतिकता और नशामुक्ति के संस्कार रहें।

गुरुदेव तुलसी ने 'अणुव्रत' के छोटे-छोटे नियमों की बात कही थी — उन्हें अपनाने से जीवन अच्छा बन सकता है। आचार्यश्री महाप्रज्ञजी प्रेक्षा ध्यान कराते थे। व्यक्ति आँख मूँद कर अपने भीतर देखे — मैं कौन हूँ? कैसा हूँ? धर्म और अध्यात्म की साधना से आत्मा का कल्याण संभव है। धर्मग्रंथों, संतों और पंथों से हमें उत्तम प्रेरणाएँ प्राप्त हो सकती हैं। सबके प्रति मैत्री की भावना रहे। इस मानव जीवन से हम भवसागर को तरकर मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। विद्यालय में विद्यार्थियों को ज्ञान के साथ अच्छे संस्कार दिए जाएँ।

पूज्यवर के स्वागत में विद्यालय के प्रिंसिपल परवीन पटेल ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

पट्ट आधार तो चद्दर है सुरक्षा कवच : आचार्यश्री महाश्रमण

सोलहवें पट्टोत्सव पर तेरापंथ के राजाधिराज को पालनपुर में चतुर्विध धर्मसंघ ने किया वर्धापित

पालनपुर।
7 मई, 2025

वैशाख शुक्ल दशमी का पावन दिन— भगवान महावीर का केवलज्ञान कल्याणक दिवस। आज ही के दिन सरदारशहर के गांधी विद्या मंदिर के यूनिवर्सिटी ग्राउंड में युवाचार्य श्री महाश्रमण विधिवत रूप से चतुर्विध धर्म संघ की उपस्थिति में तेरापंथ धर्म संघ के आद्य प्रवर्तक आचार्य श्री भिक्षु की परंपरा में आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के अनंतर, एकादशम् पट्टधर के रूप में प्रतिष्ठित हुए थे।

सरदारशहर में ही गुरुदेव तुलसी की आज्ञा से मुनिश्री सुमेरमलजी लाडनूं के करकमलों से बालक मोहन दीक्षित होकर मुनि मुदित कुमार बन गए थे। गुरुदेव तुलसी की पारखी दृष्टि ने आपको महाश्रमण पद पर स्थापित किया था। आचार्य श्री महाप्रज्ञजी ने अपने उत्तराधिकारी के रूप में युवाचार्य पद पर स्थापित किया था। आप ही एकमात्र ऐसे सौभाग्यशाली हैं, जिनके लिए दो युवाचार्य मनोनयन पत्र लिखे गए थे। सम्पूर्ण धर्म संघ ने आपके सोलहवें पट्टोत्सव के पावन दिवस पर आपकी अभ्यर्थना कर सात्विक आह्लाद की अनुभूति की।

महाश्रमणोत्सव समवसरण में आयोजित युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमणजी के 16वें पदारोहण दिवस समारोह का शुभारंभ आचार्यश्री के मंगल मंत्रोच्चार के साथ हुआ। संतवृंद ने आचार्यश्री की स्तुति में मंगल सूक्तों का संगान किया।

प्रतिनिधि ने की आराध्य के केवलज्ञान प्राप्ति दिवस पर अभ्यर्थना

आचार्य भिक्षु की गद्दी को दीपाने वाले, आचार्य महाप्रज्ञ के सक्षम पट्टधर, युगप्रधान परम पूज्यवर आचार्य श्री महाश्रमणजी ने अमृत देशना देते हुए फरमाया कि श्रमण ज्ञातपुत्र भगवान महावीर लोक में उत्तम हैं। आज वैशाख शुक्ल दशमी — भगवान महावीर के केवलज्ञान प्राप्ति दिवस है। भगवान महावीर की साधना ने आज के दिन निष्पत्ति प्राप्त कर ली थी। व्यक्ति पुरुषार्थ करता है। पुरुषार्थ का फल तत्काल भी प्राप्त हो सकता है, तो लंबे काल बाद भी प्राप्त हो सकता है, पर पुरुषार्थ किया है तो फल अवश्य मिलता है।

भगवान महावीर ने पूर्व भवों में भी साधना की थी। आज का दिन ज्ञान-दर्शन प्राप्ति से जुड़ा दिन है, वीतरागता की प्राप्ति का दिन है। भगवान ने आज के दिन क्षीणमोहता, बारहवें गुणस्थान और केवलज्ञान–केवलदर्शन का संस्पर्श किया था। वे तीर्थंकर बने, केवलज्ञान प्राप्ति के बाद भगवान ने देशना दी।

क्षयोपशम और पुण्य का योग

भगवान महावीर की उत्तरवर्ती आचार्य परंपरा में एक आचार्य हुए हैं — महामना आचार्य भिक्षु। वे हमारे धर्म संघ के आद्य प्रवर्तक अनुशास्ता थे। उनकी उत्तरवर्ती आचार्य परंपरा, उनकी व्यवस्था के अनुसार आगे बढ़ी है। हमारे धर्म संघ की परंपरा रही है कि वर्तमान आचार्य, भावी आचार्य का निर्णय करें। गुरुदेव तुलसी हमारे नवमें आचार्य हुए हैं, जिनको मैंने साक्षात देखा है। आज तक के तेरापंथ के आचार्यों में सर्वाधिक आचार्यकाल प्राप्त करने वाले कीर्तिमान पुरुष थे। पांच दशकों से भी ज्यादा उनका आचार्यकाल रहा था। मैं उनके नैकट्य में रहा हूँ। उनकी शासन प्रणाली व प्रबंधन कार्य को भी मैंने देखा है। मैंने देखा है कि आचार्य के अधिकार भी बड़े होते हैं। युवाचार्य, साध्वीप्रमुखा, अगवानी किसको बनाना — यह उनका अपना अधिकार होता है। किसी के हस्तक्षेप की अपेक्षा नहीं है। तेरापंथ के आचार्य बड़े शक्तिशाली होते हैं। वर्तमान युग में इतने बड़े धर्म संघ के नेतृत्व का अधिकार मिलना बड़ी बात होती है। यह

सब क्षयोपशम और पुण्य के योग से होता है।

आचार्य श्री तुलसी ने मुझे संघीय कार्य से जोड़ा — यह उनकी दूरदर्शिता प्रतीत हो रही है। मुझे युवाचार्य महाप्रज्ञजी और आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के निकट में भी रहने का मौका मिला। मैं तेरह वर्ष तक युवाचार्य रूप में आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के निकट रहा। इन तेरह वर्षों में प्रत्येक चातुर्मास और मर्यादा महोत्सव में उनके सान्निध्य में मेरा रहना हुआ। उनके पास अध्ययन करने, ज्ञान प्राप्त करने का अवसर मिला। गुरुदेव तुलसी मुझे प्रबंधन का कार्य भी सौंपते रहे। आचार्य श्री महाप्रज्ञ के समय तो मैं व्यापक रूप में प्रबंधन से जुड़ गया था। वह मेरे प्रशिक्षण का समय था। ग्राहक बुद्धि हो, तो देख-देख कर बहुत सीखा जा सकता है।

गुरुदेव तुलसी के महाप्रयाण के बाद आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी ने वि.सं. 2054 भाद्रव शुक्ल द्वादशी के दिन मुझे उत्तराधिकारी घोषित किया था। उसके आधार पर ही आज का दिन है। आचार्य श्री महाप्रज्ञजी के निर्णय के अनुसार, वैशाख शुक्ला दशमी के दिन, धर्मसंघ ने औपचारिक रूप में दायित्व की चद्दर ओढ़ाई थी। इतने बड़े समुदाय के प्रशासन-संचालन का दायित्व मुझे आज के दिन मिला था। सरदारशहर में वह व्यवस्थित, गरिमापूर्ण कार्यक्रम था। चिंतन-मनन करके आज का दिन तय किया गया और मुझे भी भगवान महावीर के कैवल्य प्राप्ति की तिथि के साथ जोड़ दिया गया।

हमारे धर्मसंघ में एक आचार्य का नेतृत्व स्थापित है। दूसरों का भी सहयोग लिया जा सकता है। आचार्य को तो कईयों का आश्वासन होता है कि अमुक कार्य वह संभाल लेगा, यह उनका भाग्य है। इतना बड़ा व्यवस्था तंत्र है और हमारा धर्म संघ देश-विदेश के अनेक क्षेत्रों में फैला है। इस मायने में तेरापंथ व्यापक संप्रदाय है। साधु-साध्वियाँ और समणियाँ भी विचरण करते हैं।

गुरुकुलवास में वर्तमान में मुझसे दीक्षा पर्याय में बड़ा कोई नहीं है। छोटे-बड़े सब अपने-अपने ढंग से कार्य करते हैं। अंतरग और बहिरंग सहयोग से कार्य अच्छा हो जाता है। गुरुकुलवास में तो कितने संत कर्मठता से कार्य करते हैं। कार्य के प्रति निष्ठा होना बड़ी बात है। साध्वियाँ भी अपने ढंग से कार्य करती हैं, पर उनसे मेरा ज्यादा संपर्क नहीं रहता। साध्वीप्रमुखा जी और साध्वीवर्या जी से ही व्यवस्था संबंधी संपर्क रहता है। बहिर्विहारी साधु-साध्वियों एवं समणियों से तो संदेश से संपर्क हो सकता है। अनेक रूपों में सहयोग मिलने से कार्य हो सकता है, पर श्रेय तो मुखिया को ही जाता है।

संस्थाओं का होना है तेरापंथ का भाग्य

तेरापंथ का सौभाग्य है कि यहाँ हमारी कई संस्थाएँ हैं। संस्थाएँ भी अनुशासित होकर कार्य कर रही हैं। कार्यकर्ताओं में भी विनय और समर्पण का भाव है। श्रावक-श्राविकाएँ भी कितनी सेवा का कार्य करते हैं। रास्ते की सेवा, चिकित्सा सेवा आदि अनेक कार्यों ने श्रावक समाज का सहयोग मिलता है। इतने बड़े तंत्र का मुखिया होना बड़ी बात है। पट्ट आधार है, चद्दर सुरक्षा कवच है, जो आज के दिन मिले — आज पंद्रह वर्ष पूरे हो रहे हैं।

आगम के साथ संपर्क बना रहे

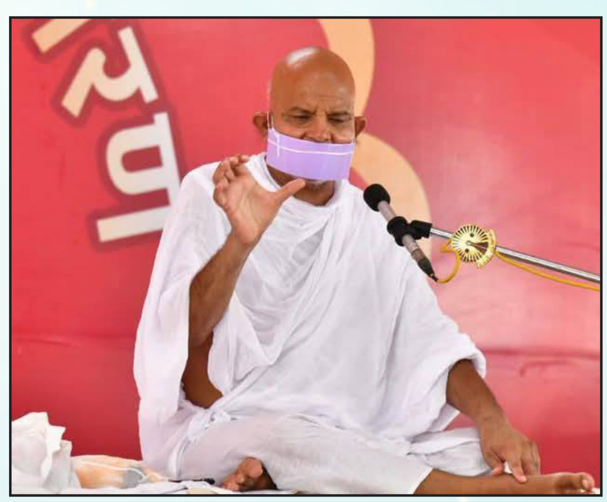

मुख्य मुनि महावीर भी मेरे व्यवस्था तंत्र के कार्य से जुड़े हुए हैं। आगे भी अच्छा कार्य करते रहें। आचार्य के पास ज्ञान हो तो अच्छी बात है, जिससे तार्किकता के साथ अपनी बात प्रस्तुत की जा सकती है। मैं आगम को बहुत महत्व देता हूँ। आगम का एक-एक अक्षर ब्रह्मवाक्य है। आगम में जो आ गया उसके प्रति मेरे मन में निष्ठा का भाव रहता है। आगम के साथ संपर्क बना रहे। आचार्य की आगम और ज्ञान के प्रति निष्ठा रहे।

क्रमशः

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
19 मई - 25 मई, 2025

आचार्य संप्रदायातीत रहें, बात को समझने का चिंतन रखें। सही क्या है, उसको पकड़ने की चेष्टा करें। निष्ठा से नई बात पकड़ में आ सकती है। साथ में संघीय मान्यताओं को भी सम्मान दें। संघ निष्ठा भीतर में हो, ज्ञानावरणीय का क्षयोपशम हो तो कई बार अनुकूल निर्णय भी हो सकते हैं।

तेरापंथ का आचार्य बनना विशेष भाग्य की बात

आचार्य पद का दायित्व मिलना भाग्य की बात ही मानता हूँ फिर तेरापंथ का आचार्य बनना विशेष भाग्य की बात लग रही है। अनेक संघ, संप्रदाय हमने देखें हैं, उनसे सुना भी है, आचार और सिद्धांतों की बात छोड़ दें पर व्यवस्था तंत्र में जो अनुशासन और व्यवस्था क्रम तेरापंथ का है वह अन्यत्र नहीं है, ऐसे संघ का आचार्य बनना विशेष भाग्य की बात लग रही है। एक आचार्य के अनुशासन में इतने साधु-साध्वियों, समणियों, श्रावक-श्राविकाओं की संख्या होना भी विशेष बात है। यहाँ आचार्य की आज्ञा और इंगित का सम्मान होता है। यह परंपरा अक्षुण्ण रहे और आगे बढ़ती रहे। यह संघ अनुशासित, मर्यादित धर्म संघ है। सब अपनी-अपनी जिम्मेदारी से कार्य करते हैं। साध्वीप्रमुखा जी का भी अपना योगदान है। साध्वीप्रमुखा के रूप में सेवा देते हुए तीन साल करीब होने को आ रहे हैं, आप तो पुरानी और अनुभवी हैं, पहले समणी नियोजिका, फिर मुख्य नियोजिका, ऐसे विकास करते-करते, अनुभवी साध्वीप्रमुखा हैं। साध्वीवर्या का भी व्यवस्था में सहयोग मिलता है। साध्वीवर्या को तो दीक्षा के चौथे वर्ष में ही पद पर स्थापित कर दिया गया था। तेरापंथ के इतिहास का विरल या अद्वितीय प्रसंग ही होगा कि किसी साध्वी को संयम पर्याय के चौथे साल में ही किसी पद पर स्थापित किया गया हो।

ऊपर जाकर देखूंगा

वर्तमान में मेरे साथ तीन पदस्थ चारित्रात्माएं शासन-प्रशासन, प्रबंधन के कार्यों से जुड़े हुए हैं। गुरुदेव तुलसी के समय में भी चार होते थे, गुरुदेव तुलसी स्वयं, युवाचार्य महाप्रज्ञ जी, महाश्रमण मुनि मुदितकुमार और साध्वी प्रमुखा कनक प्रभा जी। वही स्थिति आज भी है। गुरुदेव के साथ भी तीन थे, आज मेरे साथ भी तीन हैं। आचार्य श्री तुलसी की कृपा दृष्टि और एक आश्वान मेरे प्रति था - ''ऊपर जाकर देखूंगा कि तुम लोग कैसे काम करते हो।'' आचार्य श्री तुलसी ने कितना श्रम कर मुझे आगे बढ़ाया। आचार्य श्री तुलसी के समय में ही उत्तराधिकारी का निर्णय हो जाना बड़ी बात है। दो-दो आचार्यों की विद्यमानता में यह कार्य होना तेरापंथ के इतिहास की प्रथम बात है। उन्होंने आगे की सोचकर दायित्व का निर्वहन कर दिया था। यह हमारे लिए प्रेरणा है कि कल तक का ही नहीं, परसों तक का चिंतन करना। भविष्य के बारे में सोचना अच्छी बात है।

दो गुरुओं के चरणों में मस्तक लगाना मेरे मस्तक का सौभाग्य

आचार्य श्री तुलसी ने धर्म संघ को एक मोड़ दिया था। मेरे मस्तक का सौभाग्य था जो दो गुरुओं के चरणों में मस्तक लगाने, चरण स्पर्श करने और हाथ का सहारा देने का मौका मिला था। मेरे हाथ भी धन्य हो गए। मेरे दीक्षा प्रदाता मुनिश्री सुमेरमलजी 'लाडनूं' के साथ में भी रहने का सौभाग्य मिला था। उनसे और उनके सहवर्ती संतों से भी मुझे सीखने का मौका मिला। साध्वीप्रमुखा कनकप्रभा जी से भी बचपन में संपर्क रहा था।

बक्सीस और नवीन घोषणाएं

पालनपुर में हमारा यह त्रि-दिवसीय कार्यक्रम हुआ है। पदाभिषेक दिवस पर आचार्य प्रवर ने साधु-साध्वियों को चार महीनों तक विगय से मुक्ति की बक्सीस प्रदान की। पूज्यवर ने मुमुक्षु जिगर और मुमुक्षु अर्हम को 3 सितंबर 2025 को अहमदाबाद में होने वाले दीक्षा समारोह में मुनि दीक्षा प्रदान करने की घोषणा की। मुमुक्षु विशाल को साधु प्रतिक्रमण सीखने की अनुमति प्रदान करवाई। साथ ही आचार्यश्री ने छोटी खाटू के मर्यादा महोत्सव समारोह में माघ शुक्ला सप्तमी, 25 जनवरी 2026 को पंजाब के चातुर्मास व मर्यादा महोत्सव के विषय में कहने की भावना व्यक्त की।

धर्मसंघ फलता-फूलता रहे

आचार्य प्रवर ने आगे कहा कि जन्म दिवस को मैं इतना महत्व नहीं देता। दीक्षा दिवस का महत्व है, पर पट्टोत्सव का दिवस मेरे लिए विशेष महत्व का है। ऐसे अनुशासित धर्म संघ का नेतृत्व करने का, आचार्य बनने का मौका मिला — यह विशेष बात है। आज के दिन मुझे दायित्व मिला, इस दायित्व के प्रति मेरी निष्ठा बनी रहे। धर्म संघ हमारे लिए त्राण है, प्राण है। साधु-साध्वियाँ, समणियाँ व श्रावक-श्राविकाएँ भी अच्छी सेवा करते रहें। मैं खुद भी और हमारा धर्मसंघ भी फलता-फूलता रहे।

आत्मसम्राट है बनना विशेष बात

साध्वीप्रमुखा श्री विश्रुतविभाजी ने पूज्यवर की अभ्यर्थना में कहा कि आज पट्टोत्सव का दिन है। चारों ओर उल्लास ही उल्लास है। आज के दिन आचार्य प्रवर ने नेतृत्व की बागडोर को हाथ में लिया था। आपके सफल नेतृत्व को देखकर अहोभाव की अनुभूति हो रही है। नेतृत्व के सन्दर्भ में चार बातें विशेष हैं — IQ, EQ, AQ और SQ। आचार्य प्रवर की बौद्धिक क्षमता विशेष है। आप एक कनेक्टर का कार्य कर रहे हैं। कितने-कितने जैन-जैनेतर लोग आपके साथ जुड़ रहे हैं। आप क्रिएटर का कार्य कर मानवता के हित की बात कर रहे हैं। आचार्य श्री अपनी शक्तियों का नियोजन संयम और तपस्या में कर रहे हैं। आभ्यंतर चेतना का जागरण कर रहे हैं। आपके तर्क का प्रति-तर्क नहीं है। आगम की गहन बातों को आप सरलता से समझा देते हैं। हर जिज्ञासा का सटीक समाधान प्रदान करा रहे हैं। आप अपने आवेश-आवेग को नियंत्रण में रखते हैं। आप उपशम के सर्वोच्च स्थान पर विराजित हैं। आप विपरीत परिस्थिति में भी चैलेंज लेकर आगे बढ़ते हैं। आप अध्यात्मनिष्ठ हैं, अध्यात्म के प्रति जागरूक हैं। बाह्य सौंदर्य को आप अध्यात्म के सौंदर्य में जोड़ देते हैं। आत्मसम्राट बनना विशेष बात है। आपके केंद्र में आत्मा रहती है। आप शतायु, दीर्घायु और चिरायु बनें और भैक्षव शासन को दीपायमान करते रहें।

विलक्षण और असाधारण आचार्य

मुख्यमुनि श्री महावीरकुमारजी ने वर्धापना के स्वरों में कहा कि तेरापंथ धर्म संघ के लिए आज का दिन एक विशेष उत्साह का दिन है। वह संघ, संघ कहलाता है जिसका नेतृत्व निपुण हो। आप चारित्र निपुण हैं। आपका प्रबंधन कौशल विशिष्ट है। आप मनोवैज्ञानिक ढंग से काम करते हैं। आप हर स्थिति में जागरूक रहते हैं। साधना में तो आप विशेष जागरूक हैं। संघ के शुभ भविष्य के प्रति भी आप जागरूक हैं। आप विलक्षण आचार्य हैं। आप एक असाधारण आचार्य होते हुए भी साधारण जीवन जीते हैं। आप पदयात्रा भी प्रलंब कर रहे हैं। आप निर्णायक मति के धनी हैं। आपकी चिंतन शक्ति विशिष्ट है। आप चिंतन, निर्णय और क्रियान्विति के महान आदर्श हैं। आपकी ख्याति भी विशेष है। तेरापंथ में तो आचार्य परम पुरुष होते हैं। आपका कृतित्व-व्यक्तित्व विशिष्ट है। एक बार जो पास में आ जाता है, आपका भक्त बन जाता है। आप सुदीर्घ काल तक हम सब पर शासन-अनुशासन कराते रहें।

अभ्यर्थना की लम्बी कतार

पूज्यवर की अभिवंदना में चारित्रात्माओं ने विभिन्न माध्यमों से अपनी प्रस्तुतियाँ दीं। मुनि अजितकुमारजी, मुनि मृदुकुमारजी व मुनि वर्धमानकुमारजी ने अदालत की सुंदर प्रस्तुति दी। मुनिवृंद ने सुमधुर गीत — "नेमा मां के आंगन आया, मानो देव कंवर" — की सुंदर प्रस्तुति दी। साध्वी वृंद ने भी सामूहिक गीत की प्रस्तुति दी। संसारपक्ष में गुजरात से संबद्ध साध्वीवृंद और समणीवृंद ने गुजराती भाषा में गीत का संगान किया।

पूज्यवर की अभ्यर्थना में साध्वी देवार्यप्रभाजी, साध्वी नवीनप्रभाजी, साध्वी तन्मयप्रभाजी, साध्वी मैत्रीयशाजी, साध्वी समताप्रभाजी, साध्वी वैभवप्रभाजी, साध्वी सिद्धांतश्रीजी, साध्वी दर्शितप्रभाजी, साध्वी हेमयशाजी, साध्वी चारित्रयशाजी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। समणी हर्षप्रज्ञाजी, समणी संचितप्रज्ञाजी ने भी अपनी प्रस्तुति दी।

पालनपुर ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों व स्थानीय तेरापंथ कन्या मण्डल ने अपनी प्रस्तुति दी। परेशभाई मोदी, तेरापंथी सभा-पालनपुर के अध्यक्ष सुभाषभाई खटेड़ ने अपनी अभिव्यक्ति दी। आचार्यश्री के संसारपक्षीय भाई सूरजकरण दूगड़ व सुमतिचंद गोठी ने भी आचार्यश्री को वर्धापित किया। समस्त तेरापंथ समाज की ओर से 'संस्था शिरोमणि' तेरापंथी महासभा के अध्यक्ष मनसुखलाल सेठिया ने आचार्यश्री की अभिवंदना की। अल्काबेन ने अपनी प्रस्तुति दी। पालनपुर के युवक-युवतियों ने गीत का संगान किया।

कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेशकुमारजी ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।